वर्ष –01, अंक – 02 (अप्रैल–जून 2023)

राजभवन संवाद

राजभवन, बिहार की त्रैमासिक पत्रिका

- ★ शिक्षा को सुदृढ़ करने का लें संकल्प
- ★ राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 : नवोन्मेषी शिक्षा का सोपान
- ★ सामूहिक प्रयास से ही शिक्षा में सुधार संभव
- ★ योग–मन एवं शरीर के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक
- ★ चिरांद : बिहार का मोहनजोदड़ो
- ★ भागलपुरी जर्दालू आमः स्वाद के साथ सुगंध भी

काव्य स्वर

सुप्रसिद्ध कवि–गीतकार गोपाल सिंह नेपाली का जन्म 11 अगस्त 1911 को बिहार के बेतिया में हुआ था। उनका मूल नाम गोपाल बहादुर सिंह था। वह बचपन से ही कविताएँ लिखने लगे थे और युवावस्था से बतौर गीतकार लोकप्रिय होने लगे थे। कवि–सम्मेलनों में उन्हें प्रमुखता से आमंत्रित किया जाता था। मुख्यधारा साहित्य, पत्रकारिता और फिल्म उद्योग–तीनों ही क्षेत्रों में उन्होंने अपना रचनात्मक योगदान दिया। उन्होंने सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के साथ 'सुधा' मासिक पत्र में और कालांतर में 'रतलाम टाइम्स', 'पुण्य भूमि' तथा 'योगी' पत्रिकाओं के संपादन में सहयोग किया था। उन्होंने आजीविका के संघर्ष से गुजरते हुए 1944 में मुंबई का रुख किया और तकरीबन 60 फिल्मों के लिए 400 से अधिक गीत लिखे। उन्होंने अपने अधिकांश गीतों के धुन भी खुद बनाए। बाद में हिमालय फिल्म्स और नेपाली पिक्चर्स फिल्म कंपनी की स्थापना कर नजराना (1949), सनसनी (1951) और खुशबू (1955) जैसी कुछ फिल्मों का निर्माण भी किया, लेकिन अधिक सफल नहीं हो सके।

उनका पहला काव्य–संग्रह 'उमंग' 1933 में प्रकाशित हुआ था। 'पंछी', 'रागिनी', 'पंचमी', 'नवीन' और 'हिमालय ने पुकारा' उनके अन्य काव्य और गीत–संग्रह हैं। 1962 के चीनी आक्रमण के समय उन्होंने कई देशभक्तिपूर्ण गीत एवं कविताओं की रचना कर देशभक्ति और आशा का संचार किया था जिनमें 'सावन', 'कल्पना', 'नीलिमा', 'नवीन कल्पना करो' आदि अत्यंत लोकप्रिय हुए।

17 अप्रैल 1963 को एक कवि–सम्मेलन से कविता–पाठ करके लौटते समय बिहार के भागलपुर रेलवे स्टेशन पर अचानक उनका निधन हो गया।

गोपाल सिंह नेपाली

मूल नाम– गोपाल बहादुर सिंह
जन्म– 11 अगस्त 1911, बेतिया, बिहार
निधन– 17 अप्रैल 1963, भागलपुर, बिहार

बदनाम रहे बटमार मगर

बदनाम रहे बटमार मगर, घर तो रखवालों ने लूटा,
मेरी दुल्हन–सी रातों को, नौ लाख सितारों ने लूटा।

दो दिन के रैन बसेरे की,
हर चीज चुराई जाती है।
दीपक तो अपना जलता है,
पर रात पराई होती है।
गलियों से नैन चुरा लाए,
तस्वीर किसी के मुखड़े की।
रह गए खुले भर रात नयन, दिल तो दिलदारों ने लूटा,
मेरी दुल्हन–सी रातों को, नौ लाख सितारों ने लूटा।

शबनम–सा बचपन उतरा था,
तारों की गुमसुम गलियों में।
थी प्रीति–रीति की समझ नहीं,
तो प्यार मिला था छलियों से।
बचपन का संग जब छूटा तो,
नयनों से मिले सजल नयना।
नादान नये दो नयनों को, नित नये बजारों ने लूटा,
मेरी दुल्हन–सी रातों को, नौ लाख सितारों ने लूटा।

हर शाम गगन में चिपका दी,
तारों के अक्षर की पाती।
किसने लिक्खी, किसको लिक्खी,
देखी तो पढ़ी नहीं जाती।
कहते हैं यह तो किस्मत है,
धरती के रहनेवालों की।
पर मेरी किस्मत को तो इन, ठंडे अंगारों ने लूटा,
मेरी दुल्हन–सी रातों को, नौ लाख सितारों ने लूटा।

अब जाना कितना अंतर है,
नजरों के झुकने–झुकने में।
हो जाती है कितनी दूरी,
थोड़ा–सी रुकने–रुकने में।
मुझ पर जग की जो नजर झुकी,
वह ढाल बनी मेरे आगे।
मैंने जब नजर झुकाई तो, फिर मुझे हजारों ने लूटा,
मेरी दुल्हन–सी रातों को नौ लाख सितारों ने लूटा।

वर्ष -01, अंक - 02 (अप्रैल-जून, 2023)

राजभवन संवाद
राजभवन, बिहार की त्रैमासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
रॉबर्ट एल.चोंग्थू

कार्यकारी संपादक
राकेश पाण्डेय

संपादक मंडल
प्रीतेश देसाई
संजय कुमार
धीरज नारायण सुधाँशु

सम्पादकीय पता : जन-सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना, बिहार - 800022
ई मेल : pr.rajbhavan@gmail.com
दूरभाष : 0612-2786119
E-Patrika - www.governor.bih.nic.in

प्रकाशक/मुद्रक : स्वत्व मीडिया नेटवर्क प्रा.लि., नियर कुल्हड़िया कॉम्प्लेक्स, पटना, बिहार से प्रकाशित एवं मारुति ऑफसेट, डी.एन. दास रोड, बंगाली अखाड़ा, पटना से मुद्रित।
ई मेल : swatvapatrika@gmail.com
दूरभाष : 9608190823

संवाद की निरंतरता में ही जीवंतता

'राजभवन सवांद' त्रैमासिक पत्रिका का दूसरा अंक (अप्रैल–जून, 2023) आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका की यह निरंतरता सुखद है। दरअसल, संवाद की निरंतरता उस बहती हुई नदी के जल की तरह होती है जिसमें गति के साथ जीवंतता भी होती है। हमारे समाज में सम्यक संवाद की एक पुरातन परम्परा रही है। हमारा मानना है कि संवाद जहां परस्पर व्यक्ति से व्यक्ति और संस्था से समाज को जोड़ता है वहीं उसमें समाधान की भावना भी निहित होती है। किसी भी समाज की प्रगति में संवाद की महत्ता शाश्वत और सर्वस्वीकृत है। पत्र–पत्रिकाएं भावनाओं व विचारों की अभिव्यक्ति के साथ ही सार्थक संवाद का ही तो एक सशक्त जरिया है।

संवाद के लिए शब्द और शब्दों के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान के लिए शिक्षा जरूरी है। देश और काल की आकांक्षाओं के अनुकूल शिक्षा से ही समाज में बदलाव व प्रगति संभव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ज्ञानान्वेषण की अपार संभावनाओं का द्वार खोलने वाला एक सद्प्रयास है। इस अंक में एक आलेख के माध्यम से नई शिक्षा नीति की विशेषताओं व लक्ष्यों को उल्लेखित करने का लघु प्रयास किया गया है। महामहिम के 'शब्द संवाद' कॉलम में भी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और उपादेयता का उल्लेख कई विभ्रमों को दूर करने में सहायक है।

इस अंक के संयोजन में महामहिम के उद्गारों एवं सम्बोधनों के साथ ही राजभवन की विविध गतिविधियों व लोकरूचि के अन्य विषयों को शामिल किया गया है। स्थायी कॉलम के अन्तर्गत बिहार की विरासत, लोकसंस्कृति एवं बिहारी स्वाद को जगह दी गई है। 'काव्य–स्वर' कॉलम के तहत गीतों के राजकुमार के रूप में विख्यात गोपाल सिंह नेपाली के बारे में संक्षिप्त जानकारी व उनकी एक काव्य–रचना के साथ ही 'बिहार विभूति' के अन्तर्गत जगत व ब्रह्म के रहस्यों पर आदिगुरु शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करने वाले पं. मंडन मिश्र, 'धरोहर' के अन्तर्गत 'चिरांदः बिहार का मोहनजोदड़ो', 'बिहारी स्वाद' कॉलम में भागलपुरी जर्दालू आम तथा 'लोक–संस्कृति' के तहत 'अनूठी है थारुओं की लोकसंस्कृति' जैसे आलेखन पाठकों का ध्यान आकर्षित करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

आशा है, पूर्व की तरह यह अंक भी पाठकों के बीच समादृत होगा।

शुभकामनाओं के साथ–

(रॉबर्ट एल० चोंग्थू)
राज्यपाल के प्रधान सचिव

इस अंक में...

शिक्षा को सुदृढ़ करने का लें संकल्प	04
नवोन्मेषी, प्रभावी व संवादात्मक शिक्षा का सोपान	05
सामूहिक प्रयास से ही शिक्षा में सुधार संभव–राज्यपाल	07
मानव और मानवीय मूल्यों को केन्द्र में रखकर करें चर्चा–राज्पाल	08
मानवाधिकारों की बातें स्वाभाविक व स्वतः स्फूर्त हों–राज्यपाल	09
नई पीढ़ी को नशे की लत से बचाएं–राज्यपाल	11
ग्रामीणों और उनकी समस्याओं से रू–ब–रू हुए महामहिम	13
नौकरी की तलाश करने के बजाय रोजगार उपलब्ध कराने वाले बनें युवा	14
हमारी एकता में ही भारत की श्रेष्ठता	16
टीएमबीयू में लैंगिक समानता पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	20
चिरांद : बिहार का मोहनजोदड़ो	21
समय सीमा में परीक्षा का आयोजन व परीक्षाफल का हो प्रकाशन–राज्यपाल	23
योग–मन एवं शरीर के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक–राज्यपाल	26
बिहार विभूति मंडन मिश्र	27
भागलपुरी जर्दालू आम : स्वाद के साथ सुगंध भी	29
अनूठी है थारुओं की लोक संस्कृति	30

आवरण : शिक्षा का प्राचीन केंद्र विक्रमशिला
फोटो : सौजन्य इंटरनेट

शिक्षा को सुदृढ़ करने का लें संकल्प

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर
राज्यपाल, बिहार

देश चतुर्दिक करवट ले रहा है और हमें समय की चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए ताकि शिक्षा के क्षेत्र में बिहार पीछे न रहे। हम सब जानते हैं कि शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने तथा एक न्यायसंगत और समावेशी समाज के निर्माण के साथ ही राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने की मौलिक जरूरत है। शिक्षा के प्रक्षेत्र में आज पूरा विश्व परिदृश्य तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तेजी से बदल रहे वैश्विक पारिस्थितिकी और भारत के सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने के उद्देश्य से ही लाई गई है।

देश और बिहार की शिक्षा व्यवस्था में सुधार सामूहिक प्रयत्न से ही संभव है और यह हमारा दायित्व है तथा हम इससे पीछे नहीं हट सकते हैं। उच्च शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ करना आवश्यक है। बिहार में उच्च शिक्षा हेतु बेहतर व्यवस्था एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण हम सब की सामूहिक जिम्मेवारी है। निर्विवाद रूप से शिक्षा के क्षेत्र में बिहारी आगे हैं, परन्तु हमें इस क्षेत्र में बिहार को भी आगे बढ़ाने का प्रयत्न करना होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत 'सेमेस्टर सिस्टम' एवं 'च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम' पर आधारित स्नातक कोर्स बिहार के छात्रों के हित में है। इसके तहत छात्र–छात्राओं को मात्र स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के लिए तीन वर्षों तक ही अध्ययन करना होगा। जो छात्र–छात्राएँ उच्चतर शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अथवा विदेशों में पढ़ाई करना चाहते हैं अथवा अन्य विश्वविद्यालय, जहाँ उच्चतर शिक्षा के लिए स्नातक स्तर पर चार वर्ष की शिक्षा आवश्यक हो, वहाँ प्रवेश पाना चाहते हैं, वे अपनी इच्छानुसार चौथे वर्ष की पढ़ाई का विकल्प चुन सकते हैं। सेमेस्टर सिस्टम पूरे देश में लागू है। बिहार में पटना विश्वविद्यालय में भी यह सिस्टम पूर्व से लागू है। सेमेस्टर सिस्टम के तहत बच्चों के मेधा की पहचान बेहतर ढंग से की जा सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। शिक्षक समाज के मार्गदर्शक होते हैं तथा नई पीढ़ी को तैयार करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लोगों में उनके प्रति आदर और श्रद्धा का भाव होता है। शिक्षकों के मन में यह भाव होना चाहिए कि ईश्वर ने उन्हें समाज निर्माण के एक विशिष्ट कार्य के लिए चुना है। उन्हें अपने मन में एक शिक्षक होने एवं इसके उत्तरदायित्वों के निर्वहन के संबंध में गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

इसके साथ ही शिक्षकों को पढ़ाने में आनंद की अनुभूति होनी चाहिए तथा उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बिहार के बच्चों को उच्च शिक्षण के लिए बाहर नहीं जाना पड़े। अगर ऐसा माहौल बनता है तो दूसरे राज्यों के विद्यार्थी भी यहाँ पढ़ने आएंगे। उन शिक्षकों और समाज के ऐसे लोगों को सम्मानित करने की जरुरत है जो निःस्वार्थ भाव से एवं बिना किसी सम्मान की आकांक्षा के अपने कर्त्तव्य का निर्वहन कर रहे हैं। शिक्षा के ऐसे साधकों से अन्य लोगों को भी प्रेरणा लेने की जरूरत है।

बिहार में शिक्षा की गौरवशाली परम्परा रही है। देश से ही नहीं विदेशों से भी बड़ी संख्या में नालंदा विश्वविद्यालय में हजारों छात्र अध्ययन के लिए आते थे। नालंदा के साथ ही बिहार के उदवंतपुरी और बिक्रमशिला भी शिक्षा के ऐसे केन्द्र थे जो सदियों तक अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर आकर्षण बने रहे थे। ऐसे शिक्षा केन्द्रों व उनकी शिक्षा की विश्वस्तरीय व्यवस्था के कारण ही भारत विश्वगुरु कहलाता था। हम सबको संकल्प लेना होगा कि आज एक बार फिर बिहार शिक्षा के क्षेत्र में अपने प्राचीन गौरव को हासिल करे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की अनेक ऐसी विशेषताएं हैं जो हमारी आज की जरूरतों को पूरी करने और हमारे खोये गौरव को वापस लाने में सक्षम है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर व्यापक विमर्श की आवश्यकता है। सभी महाविद्यालयों में सेमिनार कराने के साथ–साथ व्यापक अभियान चला कर विद्यार्थियों और अभिभावकों को भी इससे अवगत कराया जाए ताकि इस नीति का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित हो सके।

■

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

नवोन्मेषी, प्रभावी व संवादात्मक शिक्षा का सोपान

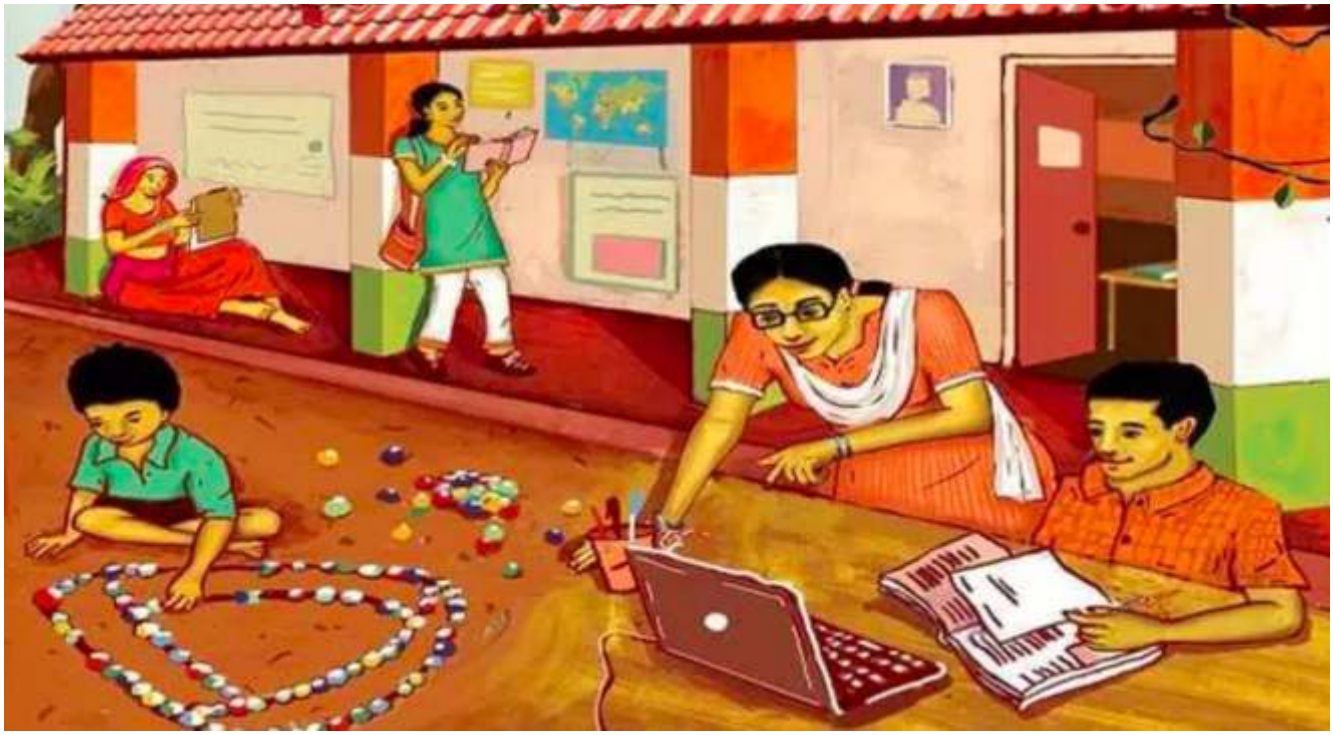

शिक्षा किसी भी प्रगतिशील समाज की आधारशिला होती है। यह व्यक्ति को उदात्त जीवन मूल्यों को धारण करने एवं उच्चादर्शों पर चलने में सक्षम बनाकर मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाती है। शिक्षा व्यक्ति को सशक्त बनाती है, समुदायों को बदलती है और राष्ट्रों को आगे बढ़ाती है। शिक्षा की इस महत्ता को स्वीकार करते हुए समय के अनुरूप शिक्षा नीति तैयार की जाती है ताकि नई पीढ़ी योग्य नागरिक बनकर देश के विकास में अपना महत्तम योगदान दे सके।

स्वतंत्र भारत में पहली शिक्षा नीति वर्ष 1968 में और दूसरी शिक्षा नीति वर्ष 1986 आई। पुनः 34 वर्षों के बाद केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 लाई गई है, जो 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है। यह नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में गठित समिति की अनुशंसा पर आधारित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखकर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति में बदलना है। साथ ही, ऐसे युवाओं को तैयार करना है जो तर्कसंगत विचार करने और कार्य करने में सक्षम होने के साथ–साथ उच्च मानवीय मूल्यों को धारण करने की क्षमता रखते हों। समानता, गुणवत्ता, जबाबदेही और सबके लिए आसान पहुँच के आधार स्तम्भों पर तैयार यह नीति नवोन्मेषी, प्रभावी तथा संवादात्मक है, ताकि समरस समाज के निर्माण में सहयोग मिल सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत की परम्पराओं और मूल्यों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। सरकार ने बच्चों को विश्व स्तरीय और कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से इस नीति के तहत स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा में कई अहम बदलाव किये हैं। सर्वविदित है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करती है तथा राष्ट्रीय आकांक्षा को ऊंची उड़ान के लिए पंख देती है। ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत हुआ है। बिग डेटा, मशीन लर्निंग और आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस (AI) जैसे क्षेत्रों में हो रहे वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के चलते जहां मशीनों की बहुलता बढ़ी है, वहीं डेटा साइंस, कम्प्यूटर साइंस और गणित के क्षेत्र में कुशल कामगारों की जरूरत और मांग भी बढ़ी हैं।

इसके साथ ही रोजगार और वैश्विक पारिस्थितिकी में तीव्र गति से हुए परिवर्तनों की वजह से शिक्षा–क्षेत्र का और व्यापीकरण हुआ है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और घटते प्राकृतिक संसाधनों की वजह से हमें ऊर्जा, भोजन, पानी और स्वच्छता आदि की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए रास्ते खोजने पर विवश होना पड़ा है। ऐसे में जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, कृषि, जलवायु विज्ञान और समाज विज्ञान के क्षेत्रों में सैद्धांतिकी के साथ ही व्यावहारिक ज्ञान की जरूरत महसूस होने लगी है। आज ऐसे लोगों की भी जरूरत है जो डेटा साइंस, कम्प्यूटर साइंस और गणित के साथ विज्ञान, समाज विज्ञान और मानविकी के विविध विषयों की व्यावहारिक योग्यता रखते हों। महामारी और महामारी के वैश्विक संक्रमण के दौर में रोग प्रबंधन और टीकों के विकास में

सहयोगी अनुसंधान की आवश्यकता भी महसूस की जाने लगी है।

गौरतलब है कि भारत विकसित देश बनने के साथ ही विश्व की तीन बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। भारत के सतत विकास एजेंडा–2030 के लक्ष्यों के अनुसार सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन–पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देने का मार्ग राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 प्रदान करती है। रोजगार और वैश्विक पारिस्थितिकी में तेजी से हो रहे बदलाव की वजह से यह जरूरी हो गया है कि बच्चे, जो कुछ सीख रहे हैं, उसे तो सीखें ही साथ ही और अधिक सीखते रहने की कला भी सीखें। इसलिए शिक्षा में विषयवस्तु को बढ़ाने की जगह जोर इस बात पर है कि बच्चे समस्या–समाधान और तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सोचना सीखें, विविध विषयों के बीच अंतर्संबंधों को देख पाएं, नई और बदली हुई परिस्थितियों में कुछ नया सोच और कर पाएं। शिक्षण–प्रक्रिया विद्यार्थी केन्द्रित हो, जिज्ञासा, अनुसंधान, अनुभव और संवाद के आधार पर संचालित लचीली, समग्रता में देखने–समझने में सक्षम बनाने वाली व रूचिपूर्ण हो। शिक्षा ऐसी हो जो रोजगारोन्मुखी होने के साथ विद्यार्थियों में नैतिकता, तार्किकता, करुणा और संवेदनशीलता भी विकसित करे।

इस नीति को भारत की समृद्ध विविधता और संस्कृति का सम्मान रखते हुए देश की स्थानीय और वैश्विक जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो हमारे युवाओं को ज्ञानवान बनाने के साथ ही उनमें राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की भावना का संचार करने वाली है

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परम्परा के आलोक में यह नीति तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य का अनुसंधान भारतीय विचार परम्परा और दर्शन में सदा सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य रहा है। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा गुरुकुल की शिक्षा के बाद के जीवन की तैयारी मात्र नहीं बल्कि पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करना था। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला और वल्लभी ऐसे ही प्राचीन भारत के विश्वस्तरीय शिक्षण–केन्द्र थे, जिन्होंने विविध क्षेत्रों में शिक्षण और शोध के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए थे और विभिन्न पृष्ठभूमि तथा भौगोलिक क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को प्रभावित व लाभान्वित किया था। इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणी दत्ता, माधव, पाणिनी, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगला, शंकरदेव, कल्हण, अभिनव गुप्त, मैत्रेयी, गार्गी और थिरुवल्लुवर जैसे अनेक महान विद्वानों को जन्म दिया। इन विद्वानों ने ही वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विविध क्षेत्रों, जैसे गणित, खगौल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, शल्य चिकित्सा, स्थापत्य, भवन निर्माण, वास्तुकला, नौकायन, दिशा–ज्ञान, योग, ललित कला, संगीत आदि में अद्वितीय मौलिक योगदान दिया।

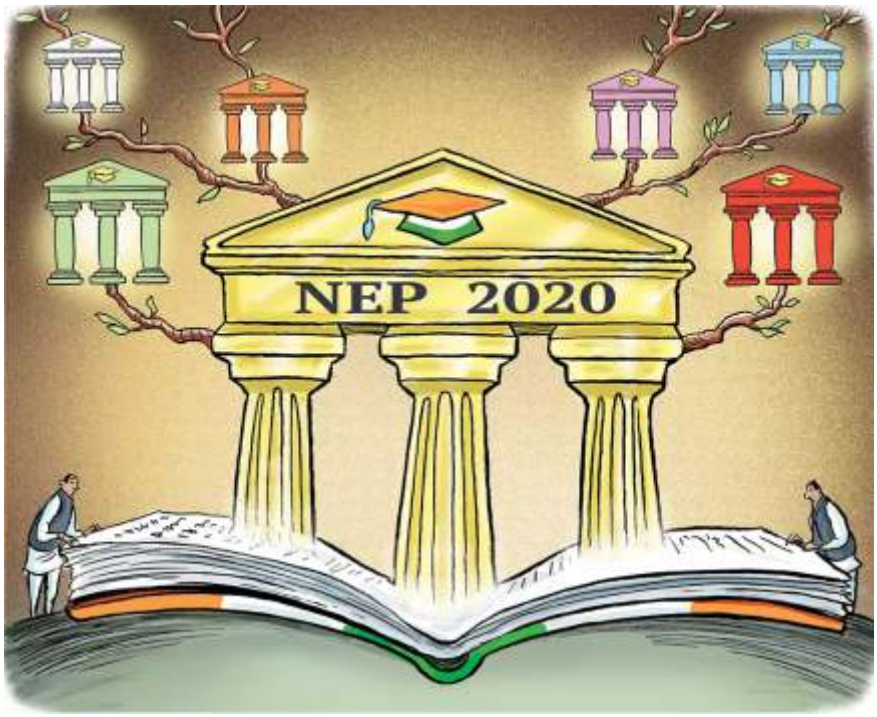

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य वैश्विक महत्व की इस समृद्ध विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए न सिर्फ सहेज कर संरक्षित रखने का है, बल्कि हमारी वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था को अनुसंधानोन्मुखी बना कर उसे और समृद्ध करने और नए उपयोगों के बारे में सोच को प्रेरित करने का भी है। इस नीति को भारत की समृद्ध विविधता और संस्कृति का सम्मान रखते हुए देश की स्थानीय और वैश्विक जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो हमारे युवाओं को ज्ञानवान बनाने के साथ ही उनमें राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की भावना का संचार करने वाली है। दरअसल, इस शिक्षा नीति का उद्देश्य ही ऐसे उत्पादक युवाओं को तैयार करना है जो देश के संविधान द्वारा परिकल्पित समरस समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से अपना योगदान दे सकें। हम सब अवगत है कि अगले दशक में भारत दुनिया का सबसे युवा आबादी वाला देश होगा और इन युवाओं को उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने पर ही भारत विश्व में अग्रणी और विश्वगुरु होने का गौरव प्राप्त कर पायेगा। ■

सेमिनार में उपस्थित आमंत्रितों को संबोधित करते हुए महामहिम (05 जून, 2023)

राजभवन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर सेमिनार

सामूहिक प्रयास से ही शिक्षा में सुधार संभव–राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राजभवन, बिहार के राजेन्द्र मंडप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के विविध पहलुओं पर व्यापक विचार–विमर्श के लिए 05 जून, 2023 को आयोजित सेमिनार के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया।

राज्यपाल ने संपूर्ण क्रांति दिवस के अवसर पर इस सेमिनार के आयोजन को एक सुखद संयोग बताते हुए कहा कि लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने शिक्षा पर भी चिंतन किया था। जे०पी० का मानना था कि समग्र क्रांति में ही देश की सर्वांगीण प्रगति निहित है तथा शिक्षा इसका एक महत्वपूर्ण अंग है।

राज्यपाल ने सेमिनार के समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि देश करवट ले रहा है और हमें समय की चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए ताकि शिक्षा के क्षेत्र में बिहार पीछे न रहे। राज्य की शिक्षा व्यवस्था में सुधार सामूहिक प्रयत्न से ही संभव है और यह हमारा दायित्व है तथा हम इससे पीछे नहीं हट सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि शिक्षक समाज के मार्गदर्शक होते हैं तथा नई पीढ़ी को तैयार करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लोगों में उनके प्रति आदर और श्रद्धा का भाव होता है। शिक्षकों के मन में यह भाव होना चाहिए कि ईश्वर ने उन्हें समाज निर्माण के एक विशिष्ट कार्य के लिए चुना है। उन्हें अपने मन में एक शिक्षक होने एवं इसके उत्तरदायित्वों के निर्वहन के संबंध में गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को पढ़ाने में आनंद की अनुभूति होनी चाहिए तथा उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बिहार के बच्चों को उच्च शिक्षण के लिए बाहर नहीं जाना पड़े।

राज्यपाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इसके संबंध में सभी महाविद्यालयों में सेमिनार कराने के साथ–साथ शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों को भी इससे अवगत कराया जाए ताकि इस नीति का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित हो सके।

सेमिनार के प्रथम सत्र को आंध्र प्रदेश के केन्द्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० टी०वी० कट्टीमणि, दूसरे सत्र को दिल्ली विश्वविद्यालय की विधि संकाय (Faculty of Law) की प्रो० के० रत्नावली तथा तृतीय सत्र को भोज विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति प्रो० आर०आर० कन्हेरे ने संबोधित किया। शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार सिंह ने चौथे सत्र को संबोधित किया। सेमिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भी अपने विचार रखे। सेमिनार के दौरान लोगों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया गया।

इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू एवं बिहार राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद् के सदस्य सचिव–सह–राज्य परियोजना निदेशक श्री वैद्यनाथ यादव के अतिरिक्त बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, अंगीभूत महाविद्यालयों के प्राचार्यगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं कर्मीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे। ■

सेमिनार में प्रमुख वक्ताओं के साथ महामहिम (05 जून, 2023)

लेबर–20 सम्मेलन

मानव और मानवीय मूल्यों को केन्द्र में रखकर करें चर्चा–राज्यपाल

'लेबर–20 सम्मेलन में मानवीय मूल्यों, मानवाधिकार तथा मानवीय संबंधों को केन्द्र में रखकर चर्चा की जानी चाहिए। महिलाओं की सुरक्षा संबंधी मुद्दे को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।'– ये बातें महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 22 जून, 2023 को सम्राट अशोक कन्वेन्शन सेन्टर, पटना में जी–20 के तत्वावधान में आयोजित Labour-20 सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि इस दो दिवसीय सम्मेलन में श्रमिकों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर गंभीर चर्चा होगी और प्रतिभागी देशों के प्रतिनिधि अपने विचार रखेंगे, परंतु चर्चा के केन्द्र में व्यक्ति (Human being) अवश्य होना चाहिए। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह सम्मेलन हमें एक नई दिशा देगा।

दीप प्रज्वलन कर एल–20 सम्मेलन का उद्घाटन करते महामहिम (22 जून, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि बिहार ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारत का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण राज्य है। प्राचीन काल में यह शिक्षा का प्रमुख केन्द्र रहा है और यहाँ के नालन्दा विश्वविद्यालय में विभिन्न देशों के विद्यार्थी पढ़ने आते थे। बिहार का वैशाली विश्व का पहला लोकतांत्रिक गणराज्य था। उन्होंने सम्मेलन में आए विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों को बिहार के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण की सलाह दी।

राज्यपाल ने कार्यक्रम स्थल पर लगाये गये विभिन्न स्टॉल्स का निरीक्षण किया और उनके बारे में जानकारी भी ली।

कार्यक्रम को Labour–20 के अध्यक्ष श्री हिरण्मय जे० पांड्या, ब्राजील के प्रतिनिधि रूथ कोयेल्हो एवं इंडोनेशिया के प्रतिनिधि श्री हरमंतो अहमद ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर विभिन्न देशों के प्रतिनिधिगण, केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, विदेश मंत्रालय तथा राज्य सरकार के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

■

दशकों पूर्व जब सिनेमा और थिएटर बड़े शहरों तक सीमित हुआ करते थे तब चलचित्र का यह रूप कस्बों और गांवों में मनोरंजन का एक साधन था.... पटना में एल– 20 के आयोजन के अवसर पर बाइस्कोप देखते हुए महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर। (22, जून, 2023)

नालन्दा के राजगीर में 'ह्यूमन राइटस एज ह्यूमन वैल्यूज' पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

मानवाधिकारों की बातें स्वाभाविक व स्वतः स्फूर्त हों- राज्यपाल

सी-20 सम्मेलन को सम्बोधित करते महामहिम (08 जून, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने सिविल-20 वर्किंग ग्रुप द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय, राजगीर में ''ह्यूमन राइटस एज ह्यूमन वैल्यूज'' पर आयोजित दो दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सदियों से ''वसुधैव कुटुम्बकम'' हमारा आदर्श रहा है। पूरे विश्व को एक परिवार की तरह देखना हमारे चिन्तन और संस्कार में है। जी-20 के तत्वावधान में देशभर में आयोजित कार्यक्रम हमारे इसी सोच को बढ़ावा देंगे।

राज्यपाल ने कहा कि जब अमानवीय अत्याचार की घटनाएँ हमारे सामने आती हैं तब मानवाधिकारों के संरक्षण का मुद्दा उठता है। मानवता हमारे अंतस एवं स्वभाव में स्वतः स्फूर्त होना चाहिए। भारत ने दुनिया के सामने मानव मूल्यों की सर्वोच्चता का उदाहरण प्रस्तुत किया है तथा यहाँ का समाज स्वतः अधिकारों को सुरक्षित करता रहा है। उन्होंने एक अच्छा इंसान बनने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि एक बढ़िया और सुयोग्य व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में बेहतर कार्य कर सकता है।

कार्यक्रम को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के अध्यक्ष डॉ० विनय सहस्रबुद्धे एवं नालंदा विश्वविद्यालय के अंतरिम कुलपति प्रो० अभय कुमार सिंह ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर सेंटर फॉर पॉलिसी एनालिसिस, पटना के डॉ० दुर्गानंद झा, वर्ल्ड ऑर्गनाइजेशन फॉर स्टूडेंट्स एण्ड यूथ के अध्यक्ष श्री नितिन शर्मा, देश-विदेश के विद्यार्थियों, विश्वविद्यालय के प्राध्यापकगण एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। ■

हिंदी साहित्य सम्मेलन का महाधिवेशन

साहित्य समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी होना चाहिए -राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने पटना में 06 मई, 2023 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के 42वें महाधिवेशन के उद्घाटन के अवसर पर कहा कि साहित्य समाज व राष्ट्र के लिए उपयोगी होना चाहिए तथा उसमें मनोरंजन के साथ-साथ प्रबोधन का भी समावेश होना चाहिए।

उन्होंने लेखन की निरंतरता पर जोर देते हुए कहा कि नये लेखकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। नये साहित्य के सृजन के लिए यह आवश्यक है।

उन्होंने पाठक एवं लेखक के संबंधों पर चर्चा करते हुए कहा कि लेखन स्वांतः सुखाय नहीं होना चाहिए। जब पाठक पुस्तक पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया और मंतव्य देते हैं तभी पुस्तक के लेखन की सार्थकता सिद्ध होती है और इससे लेखक को भी संतुष्टि मिलती है।

हिंदी साहित्य सम्मेलन में समारोह को संबोधित करते महामहिम (06 मई, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि हिन्दी हमारे राष्ट्र की भाषा है और हमारे सामूहिक प्रयास से ही यह समृद्ध होगी तथा पूरे भारत में बोली जायेगी। इस अवसर पर लेडी गवर्नर श्रीमती अनघा आर्लेकर, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० अनिल सुलभ, पूर्व सांसद श्री रवीन्द्र किशोर सिन्हा एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

भगवान बुद्ध की पूजा-अर्चना की

राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बुद्ध पूर्णिमा 05 मई, 2023 के अवसर पर राजभवन के समीप स्थित बुद्ध पार्क में भगवान बुद्ध की पूजा-अर्चना की। उन्हें बोधगया से आए भन्ते गौतम एवं भिक्खु धम्मिसारा ने भगवान बुद्ध की पूजा करायी। इस अवसर पर उन्होंने भगवान बुद्ध से बिहारवासियों और देशवासियों के कल्याण और समृद्धि के लिए प्रार्थना की।

महाबोधि मंदिर, बोधगया में महामहिम (05 मई, 2023)

राज भवन के समीप बुद्ध पार्क में भगवान बुद्ध की पूजा अर्चना करते महामहिम (05 मई, 2023)

इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, लेडी गवर्नर श्रीमती अनघा आर्लेकर, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण, कर्मीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

'बुद्ध पूर्णिमा' पर बिहारवासियों को बधाई

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 04 मई, 2023 को बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर समस्त बिहारवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। उन्होंने कहा है कि वैशाखी पूर्णिमा के दिन ही भगवान बुद्ध का जन्म, उन्हें ज्ञान की प्राप्ति एवं उनका महापरिनिर्वाण हुआ था और इनके उपलक्ष्य में 'बुद्ध पूर्णिमा' का आयोजन किया जाता है।

राज्यपाल ने कहा कि भगवान बुद्ध का संदेश हमें सत्य, अहिंसा, प्रेम, करूणा और शांति के मार्ग पर चलकर मानवता की सेवा करने की प्रेरणा देता है। आज विश्व समुदाय जिन अनेकानेक समस्याओं का सामना कर रहा है, उनका समाधान भी भगवान बुद्ध के दर्शन एवं उपदेशों में निहित है।

उन्होंने कहा कि बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर हमें उनकी शिक्षाओं और उपदेशों को आत्मसात कर सामाजिक समरसता में अहम योगदान देने का संकल्प लेना चाहिए। ■

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर

महावीर जयन्ती पर शुभकामनाएँ

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 03 अप्रैल, 2023 को महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर समस्त बिहारवासियों एवं देशवासियों, विशेषकर जैन समुदाय के बहनों एवं भाइयों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दी।

राज्यपाल ने अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने सत्य, अहिंसा, त्याग, संयम और अपरिग्रह का संदेश दिया। उनका जीवन और विचार हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं।

राज्यपाल ने कहा है कि हमें भगवान महावीर स्वामी द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण कर सभ्य, शांतिपूर्ण एवं समतामूलक समाज के निर्माण का संकल्प लेना चाहिए। ■

नई पीढ़ी को नशे की लत से बचाएं : राज्यपाल

"अपने देश और नई पीढ़ी को बचाने के लिए नशा मुक्ति अभियान से खुद जुड़ें और इससे अधिकाधिक लोगों को भी जोड़ें। यह कार्य एक संस्था तक ही सीमित न रहे, बल्कि इसे एक सामाजिक अभियान बनायें और हम सब इसमें सहभागी बनें।" –यह बातें महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 24 मई, 2023 को रवीन्द्र भवन, पटना में नशा मुक्त भारत अभियान के अन्तर्गत नशा मुक्त बिहार अभियान के शुभारंभ के अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि नशा मुक्ति अभियान की सफलता के लिए जन जागरूकता अत्यन्त आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि हमारे देश के युवाओं, विशेषकर स्कूल एवं कॉलेज के छात्र–छात्राओं में नशे की आदत डालने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। अतः हमें सचेत रहने की जरूरत है। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखें एवं उनका उचित मार्गदर्शन करें। राज्यपाल ने कहा कि बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए ही उन्होंने राज्य के सभी महाविद्यालयों में बायोमेट्रिक उपस्थिति सुनिश्चित करने का निदेश दिया है। इससे पता चल सकेगा कि बच्चे नियमित रूप से अपनी कक्षा में आ रहे हैं।

महामहिम दीप प्रज्वलन द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए (24 मई, 2023)

इस अवसर पर उद्योग मंत्री श्री समीर महासेठ, बिहार विधान परिषद् में विरोधी दल के नेता श्री सम्राट चौधरी, विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष पद्मश्री डॉ० आर०एन० सिंह, माउंट आबू के बी०के० डॉ० बनारसी लाल साह, मुंबई के बी०के० डॉ० सचिन पराब, राजयोगिनी बी०के० संगीता एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

जी–मीडिया (बिहार/झारखंड) एजुकेशन कॉन्क्लेव 2023

बेहतर उच्च शिक्षा के लिए प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ करना जरूरी : राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने विगत 19 मई, 2023 को होटल मौर्या, पटना में जी–मीडिया (बिहार/झारखंड) द्वारा आयोजित एजुकेशन कॉन्क्लेव, 2023 को संबोधित करते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ करके ही उच्च शिक्षा को बेहतर किया जा सकता है। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आधुनिक तकनीकों के प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि इसके लिए विश्वविद्यालयों को भी विचार करना चाहिए।

मेजबानों द्वारा महामहिम का स्वागत किया गया (19 मई, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि मानव जीवन के प्रारंभ से ही सीखने की प्रक्रिया निरंतर चलती आ रही है तथा वह धीरे–धीरे विकसित होती गई। उन्होंने कहा कि व्यक्ति की प्रथम पाठशाला परिवार होता है और उसकी प्रारंभिक शिक्षा यहीं से शुरू होती है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में बिहार की शिक्षण व्यवस्था उच्च स्तर की थी और हमें इसपर गर्व है। बिहार में विकसित शिक्षा पद्धति ने पूरे विश्व का मार्गदर्शन किया।

इस अवसर पर पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० गिरीश कुमार चौधरी, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर०के० सिंह, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति प्रो० सुरेन्द्र प्रताप सिंह, अनेक शिक्षाविद्, जी–मीडिया के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

गायत्री परिवार करे युवाओं का मार्गदर्शन–राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने शांति कुंज हरिद्वार के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ, पटना में 07 मई, 2023 को आयोजित 'युवा शक्तिपीठ' कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी को सही दिशा देने में गायत्री परिवार उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है।

उन्होंने कहा कि आज के युवा आत्मकेंद्रित हो गये हैं और सिर्फ अपने एवं अपने परिवार के विषय में सोचते हैं। अत्यधिक अर्थोपार्जन एवं सुख–सुविधा के साधन जुटाना उनका उद्देश्य रह गया है। उन्हें इस मानसिकता से बाहर निकलकर समाज के लिए सोचने की आवश्यकता है और इसमें गायत्री परिवार उनका मार्गदर्शन कर रहा है।

राज्यपाल ने अच्छे व्यक्ति के निर्माण की जरुरत पर बल देते हुए कहा कि एक अच्छा इंसान हमेशा अच्छा और समाजपयोगी कार्य करता है, चाहे वह किसी भी पेशे से संबंध रखता हो। उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र से हमारे भीतर सात्विकता का संचार होता है। हमें प्रयास करना चाहिए कि यह सात्विकता स्वयं तक सीमित न रहकर दूसरों के लिए भी कल्याणकारी बने।

गायत्री शक्तिपीठ, पटना में आयोजित समारोह में राज्यपाल (07 मई, 2023)

इस अवसर पर प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ (बिहार) के प्रभारी श्री मनीष कुमार, व्यवस्थापक श्री ज्ञानप्रकाश, गायत्री शक्तिपीठ, पटना के जोनल समन्वयक डॉ० अशोक, उपजोन समन्वयक श्री लालबाबू सिंह एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

आगे बढ़ने के लिए शिक्षित होना जरूरी –राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने अभिलेख भवन, पटना में 07 मई, 2023 को अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय महासंघ द्वारा आयोजित भारतरत्न डॉ० बी०आर० अम्बेडकर की 132वीं जयंती समारोह एवं बिहार प्रदेश इकाई के प्रान्तीय महाधिवेशन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा हमारा प्राण है और आगे बढ़ने के लिए समाज को शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि डॉ० अम्बेडकर एक दूर दृष्टि सम्पन्न महापुरुष थे। उन्होंने हमें शिक्षित बनने और संगठित होकर संघर्ष करने का संदेश दिया। वह स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त बैरिस्टर थे और आजीवन संघर्षरत रहे। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। बाबासाहेब के कारण ही भारत में महिलाओं को मताधिकार के लिए आन्दोलन करने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

अम्बेदकर जयंती समारोह में युवाओं को संबोधित करते राज्यपाल (07 मई, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि बाबासाहेब के विचार पूरे देश की संपत्ति हैं। वह किसी विशिष्ट समुदाय के नहीं बल्कि पूरे देश के नेता थे। ऐसे महापुरुषों को किसी विशेष समुदाय के बंधन में रखकर नहीं देखना चाहिए। उनके विचार सर्वजन हितकारी होते हैं।

राज्यपाल ने डॉ० अम्बेडकर की जीवनी और उनकी पुस्तकों का अध्ययन करने की सलाह देते हुए कहा कि आर्थिक नीति, विदेश नीति आदि पर उनके विचार अत्यन्त बहुमूल्य हैं और हमारे लिए मार्गदर्शक रहे हैं। उनका जीवन मानव कल्याण के लिए था तथा उनके विचारों में आज के सभी प्रश्नों के उत्तर हमें मिल सकते हैं।

राज्यपाल ने बाबासाहेब अम्बेडकर के जीवन और विचारों से प्रेरणा लेकर उनके पदचिन्हों पर चलने की जरूरत बताई। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, नई दिल्ली की माननीय सदस्य डॉ० अंजुबाला, महासंघ के राष्ट्रीय प्रधान महासचिव श्री के०पी० चौधरी एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

वाल्मीकिनगर : सीमावर्ती ग्राम का परिभ्रमण एवं रात्रि विश्राम

ग्रामीणों और उनकी समस्याओं से रू–ब–रू हुए महामहिम

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने पश्चिम चंपारण स्थित वाल्मीकि नगर के अपने दो दिवसीय दौरे के पहले दिन सीमांत गाँव ठाड़ी (बगहा–2 प्रखंड अंतर्गत रामपुरवा पंचायत) पहुँचे तथा जल–जीवन–हरियाली अभियान अंतर्गत जीर्णोद्धार किये गये कुआँ, स्वच्छ भारत मिशन, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अंतर्गत शौचालयों, नल–जल योजना आदि का अवलोकन किया एवं ग्रामीणों व विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों से बातचीत की। लाभुकों ने उन्हें बताया कि जिला प्रशासन द्वारा योग्य व्यक्तियों को ससमय विभिन्न सरकारी योजनाओं से आच्छादित किया गया है। उनकी समस्याओं को स्थानीय प्रशासन द्वारा गंभीरता से सुना जाता है और उनका निराकरण भी किया जाता है। राज्यपाल ने ग्रामीणों को गाँव को साफ–सुथरा रखने एवं बच्चों को पढ़ाने–लिखाने की सलाह दी।

उन्होंने ठाड़ी जाने के पूर्व पंचायत प्रतिनिधियों के साथ बैठक भी की तथा पंचायतों में क्रियान्वित योजनाओं एवं कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने उनसे लोगों की समस्याओं का समाधान करने एवं उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने का हरसंभव प्रयास करने को कहा।

राज्यपाल ने ठाड़ी गाँव के आंगनबाड़ी केन्द्र संख्या–132 का भी परिभ्रमण किया और वहाँ गोदभराई रस्म में शामिल हुए। उन्होंने बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, पर्यवेक्षिका तथा आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका से केन्द्र पर बच्चों और महिलाओं को दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने राजकीय प्राथमिक विद्यालय, ठाड़ी में आयोजित संवाद कार्यक्रम में भी भाग लिया जहाँ विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित व्यक्तियों ने उनसे अपने अनुभव साझा किये।

ठाड़ी गाँव से लौटते समय राज्यपाल ने केला की खेती का अवलोकन किया तथा किसानों को जैविक खेती करने की सलाह दी।

राज्यपाल ने गंडक बराज का भी जायजा लिया तथा बाढ़ नियंत्रण हेतु की जाने वाली कार्रवाई के बारे में जानकारी ली। उन्होंने स्थानीय लोक संस्कृति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी भाग लिया।

राज्यपाल ने अपने दौरे के दूसरे दिन वाल्मीकि टाईगर रिजर्व का परिभ्रमण किया तथा रेडक्रॉस एवं केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के संबंध में पदाधिकारियों से वार्ता की।

■

दीक्षांत समारोह (पीपीयू)

'नौकरी की तलाश करने के बजाय रोजगार उपलब्ध कराने वाले बनें युवा'

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 27 जून, 2023 को श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल, पटना में आयोजित पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना के द्वितीय दीक्षान्त समारोह में सत्र 2020–22 में स्नातकोत्तर उत्तीर्ण 4,573 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की। उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 27 छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदक भी प्रदान किया।

दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि हमारे युवा नौकरी की तलाश करने के बजाय रोजगार उपलब्ध कराने वाले बनें। ऐसा निश्चय करने पर थोड़े से पहल और परिश्रम से सभी संसाधन सुलभ हो जायेंगे। नौकरी प्राप्त करने के लिए भी काफी प्रयास करने पड़ते हैं। यदि इतना परिश्रम सेवा प्रदाता बनने के लिए किया जाए तब हमारा जीवन बदल सकता है।

राज्यपाल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संबंध में कहा कि यह हमारी युवा पीढ़ी के हित में है। के० कस्तुरीरंगन समिति की सिफारिश पर आधारित यह नीति हमें अपनी मिट्टी से जोड़ती है तथा नई पीढ़ी को बेहतर दिशा देने वाली है। इसमें एक नई सोच निहित है। आज पूरा देश एक नये तरीके से सोच रहा है और बिहार को इसमें पीछे नहीं रहना चाहिए।

महामहिम दीप प्रज्वलन द्वारा दीक्षांत समारोह का उद्घाटन करते हुए। (27 जून, 2023)

बीएयू, सबौर में मना 7वाँ दीक्षान्त समारोह

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर के 7वें दीक्षान्त समारोह का आयोजन 11 अप्रैल, 2023 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। इस अवसर पर कुल 980 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गयी, जिसमें स्नातक के 688, स्नातकोत्तर के 243 और पी.एचडी. के 49 विद्यार्थी शामिल थे। इस समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 12 छात्रों को महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर द्वारा स्वर्ण पदक भी प्रदान किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये गये कस्तूरबा गांधी विद्यालय के बच्चों को पाठ्य सामग्री देकर सम्मानित किया गया तथा कई पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया।

टीएमबीयू भागलपुर

उपाधि का अर्थ केवल नौकरी पाना नहीं – राज्यपाल

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर के 47 वें दीक्षान्त समारोह का आयोजन टी. एन. बी. कॉलेज स्टेडियम में 26 अप्रैल 2023 को किया गया। इस अवसर पर कुल 1929 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गयी। इसके अतिरिक्त 156 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक, 5 को स्मृति पदक, 1 को डी. लिट. एवं 96 को पी. एचडी. की उपाधि महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर द्वारा प्रदान की गयी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के पहले न्यूज बुलेटिन का भी लोकार्पण किया गया। उपस्थित छात्र–छात्राओं को यह संदेश दिया गया कि उपाधि प्राप्त करने का अर्थ केवल नौकरी पाना नहीं होता है वरण शिक्षा का सही अर्थ समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान करना होता है।

दीक्षांत समारोह (एनओयू)

युवा देश के हित में करें अपनी योग्यता का उपयोग–राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 26 जून, 2023 को बापू सभागार, पटना में आयोजित नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, पटना के 16वें दीक्षान्त समारोह में उपाधि प्राप्त छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि वे अपनी योग्यता और मेधा का उपयोग समाज और देश के हित में करें।

राज्यपाल ने कहा कि बच्चों को उनके लक्ष्य के बारे में स्पष्टता होनी चाहिए। उन्हें सिर्फ नौकरी और जीवन की सुख–सुविधाएँ हासिल करने तक ही अपने को सीमित नहीं रखकर समाज के लिए कार्य करने के बारे में भी सोचना चाहिए। उन्होंने कहा कि आनेवाला समय उनकी राह देख रहा है। उन्हें अपने लक्ष्य का निर्धारण इस प्रकार करना चाहिए कि वे आगामी 25 वर्षों के अमृतकाल में देश की प्रगति में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सकें। यह सोचने के बजाय कि देश ने हमें क्या दिया, हमें यह सोचने की जरूरत है कि हमने देश को क्या दिया।

विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदान करते महामहिम (26 जून, 2023)

राज्यपाल ने छात्र–छात्राओं से कहा कि प्रारंभ से लेकर आज के दीक्षांत समारोह में उपाधि हासिल करने तक की यात्रा में उन्हें समाज के अनेकानेक लोगों का विभिन्न प्रकार से सहयोग मिला है। अब उनका दायित्व है कि वे उनकी चिन्ता करें और उनके लिए कुछ करें।

राज्यपाल ने दीक्षांत समारोह में सफल 6,700 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की, जिसमें स्नातक के 1,960 और स्नातकोत्तर के 4,740 विद्यार्थी शामिल थे। उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 27 छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदक से भी सम्मानित किया। उन्होंने उन्हें भविष्य की शुभकामनाएँ देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि वे अपने माता–पिता, अभिभावकों तथा गुरूजन की उम्मीदों को पूरा करेंगे। ■

कृषि एवं पशुधन के विकास से ही सर्वांगीण विकास संभव–राज्यपाल

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना का द्वितीय दीक्षान्त समारोह बिरला प्रौद्योगिकी संस्थान, पटना के सभागार में 15 अप्रैल, 2023 को आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र–छात्राओं को उपाधि एवं पदक प्रदान किया गया एवं विश्वविद्यालय की पत्रिका सहित अन्य पुस्तकों का विमोचन किया गया।

समारोह में पत्रिका का विमोचन करते महामहिम (15 अप्रैल, 2023)

उन्होंने दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि एवं पशु संसाधन हमारे समाज के महत्त्वपूर्ण अंग हैं और इनके विकास से ही समाज का सर्वांगीण विकास संभव है।

राज्यपाल ने कहा कि पहले पशुधन ही हमारी समृद्धि का प्रतीक था। खेती को उत्तम पेशा माना जाता था तथा पशुधन इसके लिए आवश्यक था। उन्होंने पशुधन के विकास पर बल देते हुए कहा कि सरकार इसके लिए काफी प्रयत्नशील है।

उन्होंने उपाधि प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं से कहा कि वे नौकरी की तलाश करने के बजाय पशुपालन एवं डेयरी के क्षेत्र में ऐसे अनेक कार्य कर सकते हैं जिनसे रोजगार का सृजन हो सके तथा समाज के विकास में भी वे अत्यधिक योगदान कर सकें। उन्होंने कहा कि उन्हें आगामी 25 वर्षों के अमृतकाल में समाज के हित में अधिकाधिक कार्य करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए।

राज्यपाल ने इस अवसर पर उपाधि एवं पदक प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

■

हमारी एकता में ही भारत की श्रेष्ठता

राजभवन में आयोजित गोवा दिवस समारोह में महामहिम (30, मई, 2023)

गुजरात दिवस समारोह में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए महामहिम। (28 मई, 2023)

महाराष्ट्र दिवस पर दीप प्रज्वलन करते हुए महामहिम। (14 मई, 2023)

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' अभियान के तहत महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर की पहल पर राजभवन, बिहार, पटना में पांच राज्यों – महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा, तेलंगाना और पश्चिम बंगाल का स्थापना दिवस ससमारोह मनाया गया। इस दौरान महामहिम ने कहा कि विविधता में एकता भारत की खूबसूरती है। हमारी रहन–सहन, पहनावा, खान–पान और संस्कृति भले ही अलग–अलग हैं, मगर हम सब एक ही डाली के अलग–अलग रंग के फूल हैं।

गोवा दिवस (30 मई, 2023)

गोवा सैलानियों का महत्वपूर्ण गंतव्य–आर्लेकर

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत गोवा के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि विश्व में पर्यटन के मानचित्र पर गोवा का अहम स्थान है। गोवा की प्राकृतिक सुन्दरता अत्यन्त मनोहारी है। दुनिया के सभी लोग गोवा को जानते हैं और यह राज्य सैलानियों का एक महत्वपूर्ण गंतव्य है। उन्होंने कहा कि एक छोटा राज्य होते हुए भी गोवा ने काफी विकास किया है। वहाँ का पर्यटन और खनन उद्योग काफी विकसित है। राज्यपाल ने कहा कि बिहार की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध है तथा इस राज्य की अनेक विशेषताएँ हैं। हमें गोवा की भाँति ही बिहार को भी पर्यटन सहित विभिन्न क्षेत्रों में विकसित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

गुजरात दिवस (28 मई, 2023)

गरबा और डांडिया पूरे देश की सांस्कृतिक पहचान

राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने गुजरात दिवस कार्यक्रम के अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन से भारत के सभी राज्य अन्य दूसरे राज्यों की सांस्कृतिक एवं अन्य विविधताओं से अवगत हो सकेंगे तथा भारत की एकता और अखंडता मजबूत होगी। हमारी एकता में ही भारत की श्रेष्ठता है। उन्होंने कहा कि 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' सिर्फ एक स्लोगन नहीं है, इसे अनुभव करने की आवश्यकता है। राज्यपाल ने कहा कि हमारी संस्कृति, विचारधारा, परंपरा और इतिहास एक है और सभी राज्य एक दूसरे से सांस्कृतिक और वैचारिक रूप से जुड़े हुए हैं, ऐसे में हमें एक दूसरे के रहन–सहन, खान–पान एवं उनकी जीवन पद्धति को जानने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि गरबा और डांडिया सिर्फ गुजरात की ही नहीं, बल्कि पूरे देश की सांस्कृतिक पहचान है।

महाराष्ट्र दिवस (14 मई, 2023)

पूरे भारत की मिट्टी और उसकी खुशबू एक–आर्लेकर

राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित महाराष्ट्र दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारत के विभिन्न राज्यों में संस्कृति के अलग–अलग रंग और पहलू हमें दिखाई पड़ते हैं, परंतु हमारा देश सांस्कृतिक और वैचारिक रुप से एक है। पूरे भारत की मिट्टी और उसकी खुशबू एक है।

राज्यपाल ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि इससे भारत के सभी राज्य एक–दूसरे की सांस्कृतिक विविधताओं से अवगत हो सकेंगे। इससे देश की राष्ट्रीय एकता और अखंडता मजबूत होगी तथा भारत की संस्कृति एवं अन्य विभिन्न पहलुओं को संपूर्णता में समझने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के तहत ही तमिलनाडु के 45 छात्र–छात्राएँ एवं 04 प्राध्यापक फिलहाल बिहार के भ्रमण पर हैं।राज्यपाल ने कार्यक्रम में शिवाजी महाराज की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर मराठी संस्कृति पर आयोजित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

तेलंगाना दिवस (02 जून, 2023)

संस्कृति की अलग–अलग छटाएं, फिर भी हम सब एक

राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित तेलंगाना के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी एकता ही भारत की श्रेष्ठता का परिचायक है। भारतीय संस्कृति की अलग–अलग छटाएँ हैं, किन्तु हम सब एक है।

राज्यपाल ने कहा कि हमारे देशवासियों के बीच एकता और आपसी प्रेम की भावना विभिन्न राज्यों के स्थापना दिवस के समय से नही, बल्कि हजारों वर्षों से है। हमें एकत्व की इस भावना को बनाये रखना है। उन्होंने कहा कि सरदार बल्लभ भाई पटेल की दृढ़ता और संकल्प की वजह से ही भारत अखंड बना और हमें इसकी एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखना है।

पश्चिम बंगाल दिवस (20 जून, 2023)

बंगाल का भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने पश्चिम बंगाल के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि इस राज्य के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती है। स्वतंत्रता संग्राम के अतिरिक्त देश के सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान में बंगाल का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वहाँ के साहित्यकारों की हमारी संस्कृति पर गहरा प्रभाव है और उनके साहित्य ने समाज को नई दिशा दी है। राज्यपाल ने बंगालियों की बौद्धिक क्षमता की प्रशंसा करते हुए कहा कि बंगाल जो आज सोचता है, देश उसके बारे में कल सोचता है।

राज्यपाल ने कहा कि हम सभी भारतवासियों की एक ही संस्कृति है, भले ही इसके अलग–अलग रंग हैं, लेकिन सभी का मूल भाव एक ही है। उन्होंने कहा कि जब हम एक रहेंगे तभी श्रेष्ठ बनेंगे, हमें एकत्व का भाव जागृत करने की आवश्यकता है।

■

महाराष्ट्र दिवस पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम (14मई, 2023)

तेलंगाना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए महामहिम। (02 जून, 2023)

पश्चिम बंगाल दिवस कार्यक्रम में भारत माता के चरणों में पुष्प अर्पित करते महामहिम (20 जून, 2023)

'एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम फेज–2'

देश सांस्कृतिक एवं वैचारिक रूप से एक –राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 11 मई, 2023 को आई०आई०टी०, पटना में आयोजित 'एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम फेज–2' कार्यक्रम के तहत एन०आई०टी० त्रिची, तमिलनाडु से आए छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारत के विभिन्न राज्यों में संस्कृति के अलग–अलग रंग और पहलू हमें दिखाई देते हैं, परन्तु हमारा देश सांस्कृतिक एवं वैचारिक रूप से एक है। सभी राज्यों की संस्कृति भारत की ही संस्कृति है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम से राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा तथा भारत की सांस्कृतिक एवं अन्य विभिन्न पहलुओं को संपूर्णता में समझने में मदद मिलेगी।

उन्होंने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए कहा कि भारत की एकता और अखंडता अक्षुण्ण रहने पर ही हमारा देश विश्व में श्रेष्ठ हो सकता है। हमारे देश का भविष्य युवाओं की सोच पर निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि आगामी 25 वर्षों के अमृतकाल में हमारे युवाओं को श्रेष्ठ विचारों एवं स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ राष्ट्र के विकास में सहभागी बनने की आवश्यकता है।

राज्यपाल ने आई०आई०टी०, पटना के परिसर में पौधारोपण भी किया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार सिंह, आई०आई०टी०, पटना के निदेशक, प्रोफेसर टी०एन० सिंह, संस्थान के शासक मंडल के सदस्य, सीनेट के सदस्य, संकाय सदस्य और कर्मचारीगण, एन०आई०टी० त्रिची, तमिलनाडु के विद्यार्थीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे। ■

आईआईटी पटना में 'युवा संगम' कार्यक्रम में महामहिम (11 मई, 2023)

तमिलनाडु के छात्र–छात्राओं के साथ संवाद

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 'एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम फेज–2' कार्यक्रम के तहत 12 मई, 2023 को एन०आई०टी० त्रिची, तमिलनाडु के द्वारा भेजे गए छात्र–छात्राओं से राजभवन के दरबार हॉल में संवाद किया।

इस दौरान उन्होंने सभी बच्चों के जिज्ञासाओं का समाधान किया। तमिलनाडु के छात्र–छात्राओं द्वारा राज्यपाल से बिहार के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि इस राज्य के लोग काफी अच्छे, व्यवहार कुशल, दूसरों का सम्मान करनेवाले और परिश्रमी हैं। बिहार के लोगों के लिए काम ही पूजा है। यहाँ के लोगों से मिलकर और उनसे बातचीत करके ही बिहार को ठीक ढंग से जाना और समझा जा सकता है।

संवाद के क्रम में राज्यपाल ने कहा कि वह बिहारवासियों को कुछ देने अथवा उन्हें समझाने नहीं आये हैं बल्कि वह उनके मित्र हैं और उन्हें सहयोग करना चाहते हैं।

राज्य के विकास के लिए आपस में मिलकर काम करने पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि–"Coming together is beginning, keeping together is progress and working together is success".

राज्यपाल ने बच्चों को अच्छा व्यक्ति बनने की सलाह देते हुए कहा कि एक अच्छा इंसान हमेशा बढ़िया और समाजपयोगी कार्य करता है, चाहे वह किसी भी पेशे से संबंध रखता हो। उन्होंने बच्चों को किताबें पढ़ने की सलाह देते हुए कहा कि पुस्तकें हमारे मित्र और मार्गदर्शक हैं।

छात्र–छात्राओं ने बिहार भ्रमण के अपने अनुभवों को राज्यपाल के साथ साझा करते हुए बताया कि इस राज्य के लोग काफी मिलनसार और सहयोगी प्रवृत्ति वाले हैं। वे यहाँ के आतिथ्य (Hospitality) से काफी प्रसन्न और प्रभावित हैं। राज्यपाल ने उनसे तमिलनाडु जाकर वहाँ के लोगों से बिहार की अनूठी संस्कृति एवं अच्छाइयों तथा यहाँ की मधुर स्मृतियों को साझा करने को कहा।

उल्लेखनीय है कि उस समय 'एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम फेज–2' कार्यक्रम के तहत एन०आई०टी० त्रिची, तमिलनाडु द्वारा भेजा गया एक 49 सदस्यीय दल बिहार के दौरे पर था। ■

तमिलनाडु के छात्रों के साथ बातचीत करते हुए महामहिम (12 मई, 2023)

बिहार लोक सेवा आयोग का स्थापना दिवस

परीक्षाओं के माध्यम से मेधा और प्रतिभा की हो पहचान –राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 01 अप्रैल, 2023 को सचिवालय परिसर में स्थित अधिवेशन भवन में बिहार लोक सेवा आयोग के 75वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम–सह– पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि परीक्षाओं का आयोजन युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। परीक्षाओं के माध्यम से उनकी मेधा और प्रतिभा की पहचान होनी चाहिए, न कि सिर्फ स्मरण शक्ति की जाँच।

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महामहिम (01 अप्रैल, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि बच्चों की सोच और इच्छा से अवगत होकर उनका उचित मार्गदर्शन करना हमारा दायित्व है। हमें उनमें आत्मविश्वास पैदा करने की जरुरत है। बच्चों के सामने लक्ष्य की स्पष्टता होनी चाहिए। उन्होंने युवाओं को अलग ढ़ंग से सोचने की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि हमारी नई पीढ़ी को नौकरी की तलाश करने के बजाय रोजगारों का सृजन करने वाला बनना चाहिए।

उन्होंने बिहार लोक सेवा आयोग की प्रशंसा करते हुए कहा कि अनेक चुनौतियों के बावजूद इसने अपनी विश्वसनीयता कायम रखी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आयोग आगामी वर्षों में नई सोच के साथ युवाओं के बेहतर भविष्य के लिए ठोस कार्य करेगा ताकि राष्ट्र निर्माण व इसके विकास में वे अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

इस अवसर पर राज्यपाल ने बिहार लोक सेवा आयोग के प्रतीक चिन्ह (Logo) का अनावरण किया तथा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाओं के स्वच्छ एवं कदाचारमुक्त आयोजन में उल्लेखनीय भूमिका निभाने वाले पदाधिकारियों को भी सम्मानित किया।

कार्यक्रम में बिहार लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष श्री अतुल प्रसाद, सदस्य डॉ० अरुण कुमार भगत, इम्तियाज अहमद करीमी तथा प्रो० दीप्ति कुमारी, सचिव रवि भूषण एवं पूर्व अध्यक्षगण व सदस्यगण, कर्नाटक लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्य, विभिन्न पदाधिकारीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे। ■

विश्व आयुर्वेद परिषद् का राष्ट्रीय संभाषा

आयुर्वेद हमारी मूल चिकित्सा पद्धति –राज्यपाल

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने विश्व आयुर्वेद परिषद् बिहार इकाई द्वारा विगत 01 अप्रैल, 2023 को प्रेमचंद रंगशाला, पटना में आयोजित पाटलिपुत्र राष्ट्रीय संभाषा (सेमिनार) को संबोधित करते हुए कहा कि आयुर्वेद हमारी मूल चिकित्सा पद्धति है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद हमारे ऋषियों–मुनियों की दी हुई चिकित्सा पद्धति है और इसने मानवता की बहुत बड़ी सेवा की है। कोरोना महामारी के दौरान यह चिकित्सा काफी कारगर और असंख्य लोगों की जान बचाने में सफल रही। उन्होंने कहा कि कतिपय कारणों से हमारी सोच में विकृति आने के चलते आयुर्वेद के इस्तेमाल को लेकर समाज में जागरूकता की कमी आई और इसे वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में माना जाने लगा है।

राज्यपाल ने कहा कि आयुर्वेद हमारे जीवन, घर और यहाँ तक कि रसोईघर में भी है। उन्होंने आयुर्वेद में शोध और अनुसंधान पर बल देते हुए आयुर्वेदिक चिकित्सकों से अपनी पद्धति पर पूरा विश्वास रखकर इसके पुनर्स्थापन हेतु संकल्पित होने का आवाहन किया।

राज्यपाल ने अखिल भारतीय आयुर्वेद स्नातक स्तर निबंध एवं श्लोक वाचन प्रतियोगिता–2023 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत किया तथा उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी। उन्होंने स्मारिका का विमोचन भी किया। ■

पुरस्कृत छात्र–छात्रों के साथ राज्यपाल एवं अन्य महानुभाव (01 अप्रैल, 2023)

टीएमबीयू में लैंगिक समानता पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

टीएमबीयू, भागलपुर के पीजी मनोविज्ञान विभाग में "लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण : एशियाई परिदृश्य में हम कहाँ खड़े हैं?" विषय पर आयोजित दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में नेपाल, बांग्लादेश, जर्मनी सहित देश के कई राज्यों से प्रतिनिधियों ने शिरकत की।

लैंगिक समानता एवं संतुलन का सवाल न केवल महिला अधिकारों से जुड़ा हुआ है बल्कि यह मानवाधिकार के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैश्विक स्तर पर लैंगिक असमानता एवं भेदभाव के उन्मूलन के लिए कई सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। यह सतत विकास 2030 के लक्ष्यों से भी जुड़ा हुआ है। भारत सरकार ने संवैधानिक हस्तक्षेप एवं विकासशील योजनाओं के माध्यम से शैक्षिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में लैंगिक समानता के सिद्धांतों एवं महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई सार्थक प्रयास किए हैं, जिस पर चर्चा प्रासंगिक और समीचीन है।

दीपप्रज्जवल कर कांफ्रेस का उद्घाटन करते वी.सी. प्रो. जवाहर लाल एवं अन्य (10 मई, 2023)

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर के स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग में 'लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तिकरणःएशियाई परिदृश्य में हम कहां खड़े हैं?' विषय पर दिनांक 10–11 मई 2023 को दो–दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का आयोजन किया गया। यह आयोजन इंडियन स्कूल साइकोलॉजी एसोसिएशन (इनस्पा) के सहयोग से किया गया था।

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय में

नैनो टेक्नोलॉजी पर नवीनतम रिसर्च

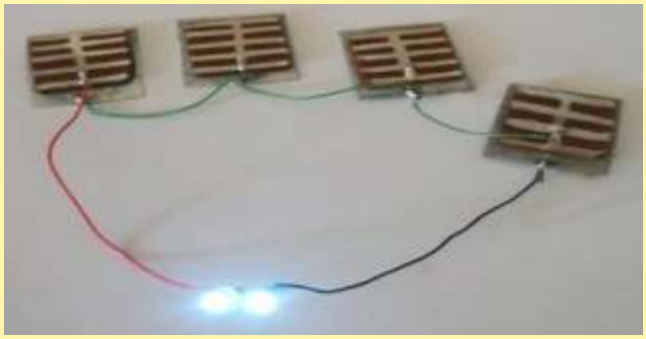

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के नैनो साइंस एवं नैनो टेक्नोलॉजी केंद्र ने लौह पदार्थ इट्रियम एल्युमीनियम बोरेट नैनो पदार्थ को रासायनिक विधि से कम लागत में तैयार किया है। इसके भौतिक एवं प्रकाशीय गुणों को विस्तार से आधुनिक उपकरण यथा–एक्स–रे, डीफरेक्ट्रोमीटर, स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप, फोटो लुमनिसेंस स्पेक्ट्रोमीटर एवं यूवी–विजिबल स्पेक्ट्रोमीटर में उपयोग किया जा सकता है। तैयार नैनो पदार्थ का साइज 1–100 नैनो मीटर के बीच पाया गया एवं पदार्थ से प्रकाश का उत्सर्जन अल्ट्रावायलेट, ब्लू क्षेत्र एवं दृष्टिक्षेत्र में पाया गया, जो लाइट एमिटिंग डायोड हेतु उपयोगी है। इस नये आविष्कार को भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग विभाग में पेटेंट हेतु आवेदित किया गया जिसे स्वीकार कर प्रोविजनल पेटेंट आवेदन संख्या–202331017221 प्रदान किया गया है।

इससे इक्कीसवी शताब्दी के नवीनतम विधाओं से सम्बंधित नैनो टेक्नोलॉजी के क्षेत्र यथा प्रकाश उत्सर्जन से चुम्बकीय प्रकाश उपकरण रिसर्च आदि के क्षेत्र में नये ज्ञान को बढ़ाने में सहयोग प्राप्त होगा। नवीनतम अनुसंधान में पदार्थ का एनर्जी बैंड गैप प्रकाश उत्सर्जन हेतु उपयुक्त पाया गया है।

इसके अतिरिक्त हरित उर्जा उत्पादन हेतु हाइड्रो इलेक्ट्रिक सेल जो चुम्बकीय नैनो पदार्थ से बनाया गया है, प्रोटोटाइप आर्यभट्ट नैनो विज्ञान एवं नैनो प्राद्यौगिकी केंद्र द्वारा अविष्कृत है। यह रिसर्च अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ''जर्नल ऑफ मैटेरियल्स साइंस एवं मैटेरियल इन इलेक्ट्रॉनिक्स'' में प्रकाशित हुआ है। इससे सम्बंधित रिसर्च यहाँ के एमटेक, पीएचडी छात्रों द्वारा व्यापक स्तर पर किया जा रहा है।

हाइड्रोइलेक्ट्रिक सेल की विशेषता है कि इस पर दो बूंद पानी डालने से बिजली का उत्पादन होता है, जो काफी कम लागत से तैयार होता है एवं इससे वातावरण प्रदूषित नहीं होता है। राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला, नई दिल्ली के वैज्ञानिक डॉ आर के कोटनाला एवं डॉ ज्योति साह के सहयोग से यह कार्य किया जा रहा है एवं इससे सम्बंधित उद्योग स्थापित करने का प्रयास जारी है। इस हाइड्रो इलेक्ट्रिक सेल का उपयोग लैंप, मोबाइल टॉर्च, लैपटॉप चार्जर एवं हाड्रोजन गैस के उत्पादन हेतु किया जा सकेगा।

चिरांद स्थित उत्खनन स्थल

चिरांद : बिहार का मोहनजोदड़ो

सारण के जिला मुख्यालय छपरा से मात्र 12 किमी. दक्षिण–पूर्व में गंगा–सरयू और सोन के पवित्र संगम पर स्थित है भारत का दुर्लभ पुरातात्विक स्थल चिरांद है जिसे बिहार का मोहनजोदड़ो की संज्ञा दी जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यह एक छोटा–सा गाँव है जो अति प्राचीन ऊँचे भिंड पर बसा है। चिरांद के भिंड (टीले) के महत्व की जानकारी विद्वानों को सन् 1885 के आसपास ही हो गई थी। इसमें संदेह नहीं कि चिरांद प्राचीन काल में एक अति महत्वपूर्ण स्थान था और हाल तक छपरा को चिरांद–छपरा कहकर पुकारते थे।

वस्तुतः चिरांद में उत्खनन कार्य विधिवत रूप से सन् 1954 के बाद ही प्रारंभ हो सका। छपरा शहर के कुछ सभ्रांत बुद्धिजीवियों ने छपरा आर्केलॉजिकल सोसायटी के नाम से सन् 1954 में एक संस्था की स्थापना की और पटना कॉलेज के प्राध्यापक व विश्व प्रसिद्ध पुरातत्वविद डा. ए.एस. अल्टेकर को चिरांद आने का आमंत्रण दिया। 14 जुलाई सन् 1954 को डा. अल्टेकर चिरांद आये और भिंड का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने अनुमान लगाया कि चिरांद का भिंड कम–से–कम 2600 साल पुराना हो सकता है अर्थात् इसका काल 600 ई. पू. होना चाहिए।

पुरातत्व की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण इस स्थल की खुदाई के लिए सर्वप्रथम जून 1960 में डायरेक्टरेट आफ आरकेलॉजी की एक टीम ने इस स्थान का निरीक्षण किया। उनकी अनुशंसा पर बिहार सरकार के पुरातत्व निदेशालय ने पहल की। डा. बी.एस. वर्मा के नेतृत्व में सन् 1962–63 में उत्खनन का कार्य विधिवत आरंभ हुआ। उत्खनन का कार्य कुछ–कुछ अंतराल पर 5 सत्रों में संपन्न हुआ और दुनिया को एक नये चिरांद के दर्शन हुए। 1969–70 के सत्र में यहां की गई खुदाई सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसी सत्र में इसके तार नवपाषाणकाल से जुड़े

चिरांद में उत्खनन के दौरान प्राप्त हुई प्राचीन वस्तुएं

होने का प्रमाण मिला। यह उस कालखंड का पूर्वी भारत का एकमात्र स्थल है, जो गंगा क्षेत्र में है। खुदाई में यहां मिट्टी के अतिप्राचीन बर्तन मिले जिसमें चावल के दाने लगे थे। इसके अलावा हड्डियों और पत्थर के औजार भी बड़ी संख्या में मिले हैं।

बुर्जहोम (कश्मीर) को छोड़कर अन्य किसी पुरातात्विक स्थल से इतनी अधिक मात्रा में नवपाषाणकालीन उपकरण नहीं मिले, जितने कि चिरांद से प्राप्त हुए हैं। यहां उत्खनन से पांच प्रकार की संस्कृतियों के अवषेष मिले हैं। विषेषज्ञों के अनुसार इसकी कार्बन तिथि ई.पू. 4900 ज्ञात हुई है। यह स्थल मैदान क्षेत्र में गंगा, सोन, गंडक एवं घाघरा के संगम पर स्थित है। यहां हिरणों के सींगों से निर्मित कई उपकरण भी पाए गए हैं। मृदभाण्डों पर चित्रांकन देखा गया है। स्नानागार व समृद्ध जल निकासी की व्यवस्था वाले भवन का अवषेष भी यहां से मिला है जो मोहनजोदड़ो व हड़प्पा जैसी सभ्यता की याद दिलाता है।

'चिरांद महात्म्य' नामक एक संस्कृत ग्रन्थ में इसे च्यवन ऋषि व श्रृंगी ऋषि के पिता ऋषि विभांड का आश्रम बताया गया है जो कल्प विद्या के ज्ञाता थे। चिरांद नाम के सम्बन्ध में पुरातत्व वैज्ञानिकों का भी अपना अनुमान है। उनका कहना है जिस मयूरध्वज नाम के राजा की कथा इस स्थान से जुड़ी है वह मयूरध्वज मौर्यध्वज भी हो सकता है, मौर्यध्वज यानी मौर्य शासक द्वारा स्थापित स्तंभ।

एक अन्य लोक मान्यता के कारण भी आज चिरांद सुर्खियों में है। लोगों का यह मानना है कि चम्पारण में स्थित अरेराज के सोमश्वर महादेव को अगर चिरांद के संगम से उठाया पवित्र जल अर्पित किया जाता है तो शनि के ताप से मुक्ति मिलती है। इसी विश्वास से प्रतिवर्ष लाखों लोग चिरांद से जल ले जाकर सोमेश्वर महादेव को अर्पित करते हैं।

चिरांद में उत्खनन कार्य 1962–63 के सत्र में ही आरंभ हो गया था लेकिन उत्खनन के इतिहास में 1969–70 के सत्र में यहाँ की गई खुदाई सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है। इसी सत्र में चिरांद की भूमि पर पूर्ण विकसित नव पाषाणकालीन अवशेष प्राप्त हुए जिसके कारण चिरांद रातों–रात पुरातत्व के क्षेत्र में दुनिया के मानचित्र पर स्थापित हो गया। उत्खनन में एक ऐसे भवन के अवशेष प्राप्त हुए हैं जिसमें आधुनिक शैली के स्नानघर और शौचालय बने हुए हैं। केश–सज्जा और अन्य प्रसाधन सामग्रियाँ जैसे आँखों में लगाने वाले एंटीमनी रॉड, बाल के जूड़े में लगाने वाले हाथी दाँत के हेयरपिन, गले में पहने जाने वाले हार, हाथी दाँत से बनी अन्य सामग्रियाँ, मनके, मोहरें, मूर्तियाँ, सोने के सिक्के आदि उपलब्ध हुए हैं, जिनमें कुछ तो खंडित हैं, लेकिन अधिकांश अखंडित हैं।

यह पुरातात्विक स्थल रामायण परिपथ को पुरातात्विक आधार प्रदान करता है। चिरांद के महत्व के विषय में लोगों को जानकारी देने और अधिक से अधिक लोगों को चिरांद से जोड़ने के उद्देश्य से 'चिरांद विकास परिषद' की स्थापना की गई है। वर्ष 2008 से परिषद के तत्वावधान में चिरांद के संरक्षण व इसके महत्व से नयी पीढ़ी को अवगत कराने के लिए सतत कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

■

कुलपतियों के साथ बैठक

समय सीमा में परीक्षा का आयोजन व परीक्षाफल का हो प्रकाशन- राज्यपाल

राज्यपाल सह कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने विगत 03 अप्रैल, 2023 को बिहार के विश्वविद्यालयों की कुलपतियों की बैठक में परीक्षाओं का आयोजन एवं परीक्षाफल का प्रकाशन एक निर्धारित समय–सीमा के भीतर सुनिश्चित कराने का निदेश दिया। उन्होंने कहा कि बिहार के सभी विश्वविद्यालयों में एक ही समय सारणी के अनुरूप एक साथ परीक्षाओं के आयोजन एवं परीक्षाफल के प्रकाशन हेतु प्रयास करें। उन्होंने विश्वविद्यालयों में शोध को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षकों को शोध के प्रति अभिरूचि विकसित करनी चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि सेवान्त लाभ के लिए गठित कोषांग को कार्यशील करें तथा सेवानिवृत्त कर्मियों को इसका भुगतान तय समय–सीमा के भीतर करें। इसके लिए सभी आवश्यक तैयारी सेवानिवृत्ति से पूर्व ही कर ली जाए।

राज्यपाल ने कुलपतियों को अन्तर्विश्वविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन प्रत्येक वर्ष बारी–बारी से प्रत्येक विश्वविद्यालय में आयोजित कराने का निदेश दिया। उन्होंने कहा कि बिहार के सभी विश्वविद्यालय मिलकर देशभर के विश्वविद्यालयों की खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन भी कराएँ।

उन्होंने विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों को शिक्षण की नई तकनीकों एवं विधियों से अवगत कराने तथा आपसी ज्ञान, समझ एवं अनुभवों को एक–दूसरे के साथ साझा करने के उद्देश्य से उनका उन्मुखीकरण शिविर (Orientation Camp) आयोजित कराने का निदेश दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक विश्वविद्यालय का एक अच्छा वेबसाईट होना चाहिए। शिक्षकों को टेक्नोसेवी होने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें शिक्षण संबंधी विभिन्न जानकारियों तथा नियमों/परिनियमों से अवगत होना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि शिक्षकों का कार्य अन्य पेशा से भिन्न है तथा उन्हें एक निश्चित समय–सीमा से बाहर आकर भी बच्चों को पढ़ाना चाहिए। पढ़ाई में कमजोर बच्चों पर विशेष ध्यान देने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि उनके लिए सुधारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) की व्यवस्था होनी चाहिए। उन्होंने बच्चों की व्यक्तिगत परेशानियों के कारण उनकी पढ़ाई में आ रही समस्याओं को जानकर उनके समाधान हेतु उनकी काउंसलिंग की व्यवस्था कराने का सुझाव दिया। राज्यपाल ने कहा कि बेहतर शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करते हुए बिहार की शैक्षणिक व्यवस्था को और भी सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

राज्यपाल की अध्यक्षता में आहूत इस बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

■

कुलपतियों की बैठक की अध्यक्षता करते महामहिम (03 अप्रैल, 2023)

- **विश्वविद्यालय में शोध कार्य को दें बढ़ावा**
- **सेवान्त लाभ का भुगतान ससमय करायें सुनिश्चित**
- **अन्तर्विश्वविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता का हो आयोजन**

कुलपतियों की बैठक में राज्यपाल का निर्देश

नये स्नातक कोर्स की प्रक्रिया शीघ्र करें पूरी

महामहिम राज्यपाल–सह–कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 13 अप्रैल, 2023 को बिहार के विश्वविद्यालयों में Choice Based Credit System (CBCS) एवंSemester System के आधार पर स्नातक की पढ़ाई प्रारंभ करने के संबंध में राजभवन में सभी कुलपतियों एवं शिक्षा विभाग के वरीय पदाधिकारियों के साथ बैठक की।

बैठक में बिहार के विश्वविद्यालयों में सत्र 2023–2027 से नया स्नातक कोर्स प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया। कोर्स की संरचना एवं प्रथम वर्ष के लिए विस्तृत पाठ्यक्रम तैयार करने हेतु कमिटी गठित करने का भी निर्णय लिया गया।

कुलपतियों को संबोधित करते महामहिम (13 अप्रैल, 2023)

बैठक में निर्णय लिया गया कि इस सत्र में विश्वविद्यालय स्तर पर ही नामांकन होगा। परन्तु सभी विश्वविद्यालयों को एक ही समय पर सभी संबंधित कार्य सम्पन्न करने होंगे। इसके लिए टाइम लाइन का निर्धारण राजभवन द्वारा किया जायेगा। अगले सत्र से नामांकन की केन्द्रीकृत प्रक्रिया अपनाई जायेगी। बैठक में एकेडमिक कैलेण्डर बनाने का निर्णय लिया गया एवं आधारभूत संरचना तथा Faculties के आकलन आदि के संबंध में भी विमर्श किया गया।

बैठक में राज्यपाल ने CBCS/Semester Systemको लागू करने हेतु महत्वपूर्ण निदेश देते हुए सभी प्रक्रियाओं को निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा करने को कहा।

बैठक में राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री दीपक कुमार सिंह एवं सचिव श्री वैद्यनाथ यादव, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, बिहार राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद के अकादमिक सलाहकार प्रो० एन०के० अग्रवाल, राज्यपाल सचिवालय के संबंधित पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

शपथ ग्रहण

श्री रत्नेश सदा को दिलायी मंत्री पद की शपथ

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 16 जून, 2023 को श्री रत्नेश सदा को बिहार मंत्रिपरिषद् के सदस्य के रूप में पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी। शपथ ग्रहण समारोह राजभवन के दरबार हॉल में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, उप मुख्यमंत्री श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, अन्य मंत्रीगण आदि उपस्थित थे। ■

श्री रत्नेश सदा को मंत्री पद की शपथ दिलाते महामहिम (16 जून, 2023)

न्यायमूर्ति श्री अनिरेड्डी अभिषेक रेड्डी को पटना हाईकोर्ट के न्यायाधीश के पद की शपथ दिलायी

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 15 मई, 2023 को न्यायमूर्ति श्री अनिरेड्डी अभिषेक रेड्डी को पटना हाईकोर्ट के न्यायाधीश के पद की शपथ दिलायी।

माननीय न्यायमूर्ति श्री अनिरेड्डी अभिषेक रेड्डी को पद की शपथ दिलाते महामहिम (15 मई, 2023)

राजभवन के दरबार हॉल में आयोजित इस शपथ ग्रहण समारोह में बिहार विधान परिषद के सभापति श्री देवेश चन्द्र ठाकुर, बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री अवध बिहारी चौधरी, राज्य सरकार के कई मंत्रीगण, पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं अन्य न्यायाधीशगण, महाधिवक्ता, बार एसोसिएशन, एडवोकेट एसोसिएशन एवं लॉयर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष व सचिव, पटना उच्च न्यायालय एवं राज्य सरकार के विभिन्न वरीय पदाधिकारीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे। ■

राज्यपाल ने राजभवन की त्रैमासिक पत्रिका 'राजभवन संवाद' का किया विमोचन

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 28 अप्रैल, 2023 को राजभवन के दरबार हॉल में राजभवन की त्रैमासिक पत्रिका 'राजभवन संवाद' का विमोचन किया।

इस अवसर पर राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारियों एवं कर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस पत्रिका के जरिये राजभवन के कार्यकलापों और गतिविधियों की जानकारी आमजन तक पहुँचेगी तथा उनकी प्रतिक्रियाओं, अपेक्षाओं और सुझावों से भी हम अवगत हो सकेंगे। उन्होंने राजभवन को लोकभवन के रूप में कार्य करने पर जोर देते हुए कहा कि लोगों के साथ संवाद स्थापित करने में यह पत्रिका महती भूमिका निभा सकेगी।

'राजभवन संवाद' पत्रिका के बारे उन्होंने बताया कि इस पहले त्रैमासिक अंक में माह जनवरी से मार्च, 2023 तक की राजभवन की गतिविधियों, बिहार की विरासत, गौरव–पुरुष और लोकसंस्कृति पर आलेख तथा कुछ विश्वविद्यालयों की गतिविधियों को शामिल किया गया है। इस पत्रिका के लिए सामग्रियों का चयन करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि यह लोकोपयोगी बन सके।

महामहिम ने त्रैमासिक पत्रिका राजभवन संवाद का विमोचन किया (28 अप्रैल, 2023)

इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, 'राजभवन संवाद' त्रैमासिक पत्रिका के कार्यकारी संपादक श्री राकेश पाण्डेय तथा राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित थे। ■

पुस्तक विमोचन

राष्ट्रवाद में ही समाजवाद समाहित : राज्यपाल

राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 04 अप्रैल, 2023 को बिहार विधान परिषद् के सभागार में डॉ० उषा विद्यार्थी द्वारा लिखित पुस्तक ''राष्ट्रनायक नरेन्द्र मोदी–राष्ट्रवाद से समाजवाद की ओर'' का विमोचन किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्रवाद में ही समाजवाद समाहित है तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ० राम मनोहर लोहिया जैसे मनीषियों के विचार राष्ट्रवाद के अंतर्गत ही आते हैं।

महामहिम ने पुस्तक का अनावरण किया (04 अप्रैल, 2023)

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का पूरा जीवन राष्ट्रवाद से ओतप्रोत रहा है तथा वह समाज के अंतिम पंक्ति के लोगों की चिन्ता करते हैं और उनके कल्याण के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के कारण हमारे देश का गौरव पूरे विश्व में बढ़ रहा है।

इस अवसर पर बिहार विधान परिषद् में विरोधी दल के नेता श्री सम्राट चौधरी, बिहार विधान सभा में विरोधी दल के नेता श्री विजय कुमार सिन्हा, पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री तारकिशोर प्रसाद, अनेक विधान पार्षद व विधायक, गणमान्य महानुभावगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

राजभवन में योग शिविर का आयोजन

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 9वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के अवसर पर राजभवन परिसर के लॉन में आयोजित योग शिविर में योगाभ्यास किया। उन्हें बिहार योग विद्यालय, मुंगेर द्वारा प्रशिक्षित संन्यासी धर्म विजय (श्री विजय शंकर), श्रीमती राजमणि, श्रीमती प्रियंका सिंह एवं सुश्री यशोधरा ने भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा जारी प्रोटोकॉल के अनुसार विभिन्न योगासनों, प्राणायाम, योगनिद्रा एवं ध्यान आदि का अभ्यास कराया।

इस योग शिविर में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू सहित राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने भी योगाभ्यास किया। ■

9वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर प्राणायाम करते महामहिम (21 जून, 2023)

योग मन और शरीर के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक–राज्यपाल

एम्स, पटना में आयोजित योग समारोह को संबोधित करते महामहिम (21 जून, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने एम्स, पटना में 9वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि योग मन और शरीर के बीच संतुलन स्थापित करने में काफी सहायक है और यह स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है। योग का संबंध किसी धर्म विशेष से नहीं बल्कि शरीर से है और विश्व के अनेक देश इसे अपना रहे हैं।

उन्होंने कहा कि एलोपैथ के साथ योग और आयुर्वेद को समाहित कर एकीकृत चिकित्सा पद्धति अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने लाईलाज बीमारियों की चिकित्सा में योग और आयुर्वेद के उपयोग संबंधी अनुसंधान की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि पूर्व के दिनों में इन्हीं के द्वारा लोगों का इलाज हुआ करता था और उनकी आयु काफी लम्बी हुआ करती थी। राज्यपाल ने आयुर्वेद को भारत की मूल चिकित्सा पद्धति बताते हुए कहा कि कोरोना महामारी के दौरान यह काफी कारगर और असंख्य लोगों की जान बचाने में सफल रही है।

राज्यपाल ने कहा कि योग का अर्थ 'जोड़ना' होता है और चिकित्सकों को समाज के उन लोगों के साथ जुड़ना चाहिए जिन्हें उनकी आवश्यकता है।

उन्होंने योग प्रतियोगिता में उल्लेखनीय प्रदर्शन करनेवाले विभिन्न श्रेणी के प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया।

कार्यक्रम में एम्स, पटना के कार्यकारी निदेशक डॉ० गोपाल कृष्ण पाल, विभिन्न चिकित्सकगण, छात्र–छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

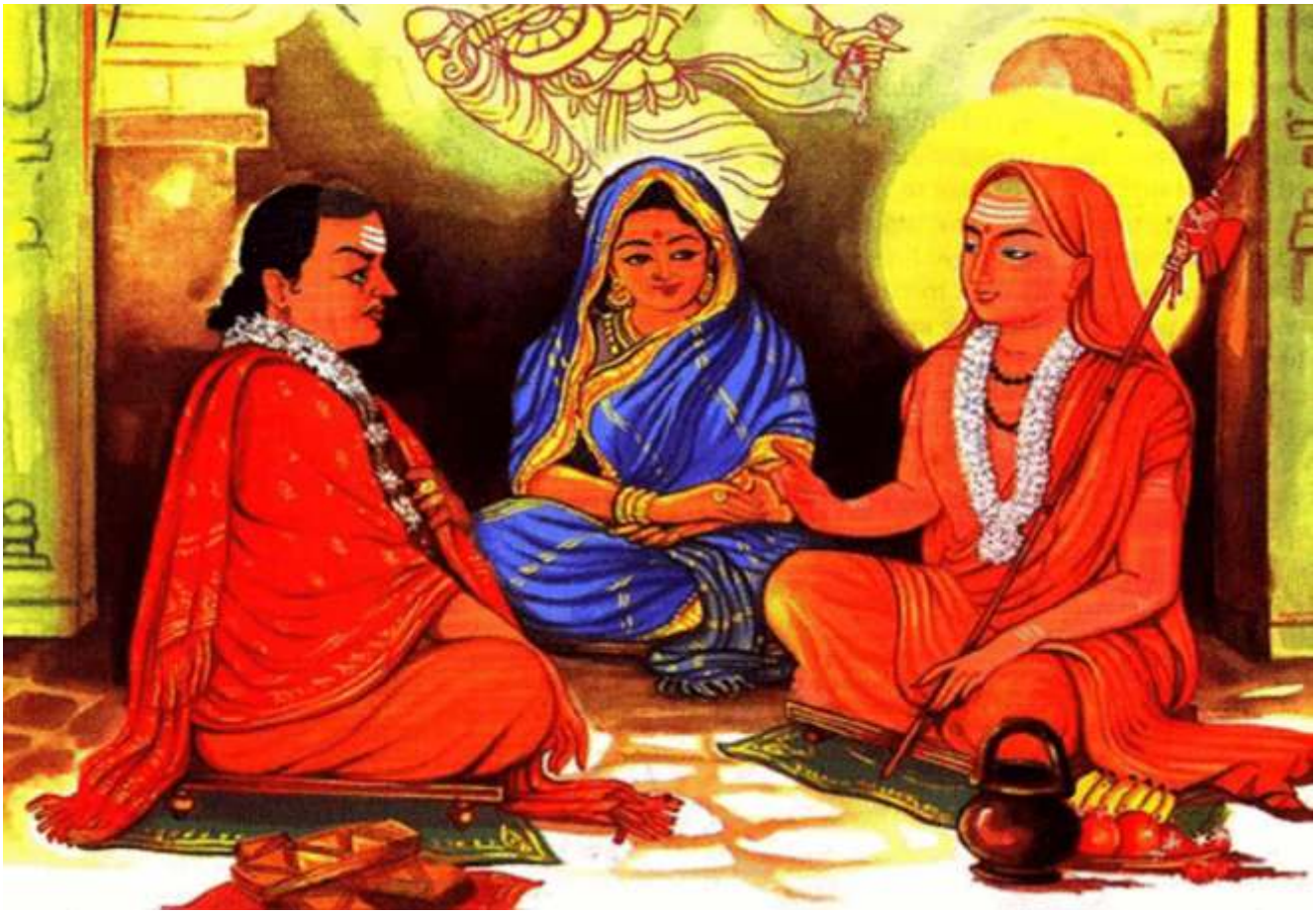

बिहार विभूति मंडन मिश्र

यह सच है कि बिहार की धरती पर हजारों ऐसी महान विभूतियाँ हुई हैं जिन्होंने अपने ज्ञान और विद्वता से भारत ही नहीं बल्कि दुनिया को भी अचंभित किया है। बिहार सदियों से ज्ञान की धरती रही है। यहां के विद्वानों ने जगत के रहस्यों को सुलझाने में मदद की है। इन्हीं ज्ञानियों में एक नाम है पंडित मंडन मिश्र और उनकी पत्नी उभय भारती देवी की। मंडन मिश्र पूर्व मीमांसा दर्शन के बड़े प्रसिद्ध आचार्य थे। कुमारिल भट्ट के बाद इन्हीं को प्रमाण माना जाता है। अद्वैत वेदांत दर्शन में भी इनके मत का आदर है। वह भर्तृहरि के बाद कुमारिल भट्ट के अंतिम समय में तथा आदि शंकराचार्य के समकालीन थे। मीमांसा और वेदांत दोनों दर्शनों पर इन्होंने मौलिक ग्रंथ लिखे।

एक समय की बात है कि भारतीय धर्म–दर्शन को उसके सबसे ऊंचे स्थान पर पहुंचाने वाले महान विद्वान् आदि शंकराचार्य ने एक बार शास्त्रार्थ में मंडन मिश्र को हरा दिया था लेकिन उनकी पत्नी भारती से शास्त्रार्थ में खुद हार गए थे। आदि शंकराचार्य को हराने वाली विदुषी भारती बिहार की थीं।

मंडन मिश्र अपनी पत्नी के साथ मिथिला के माहिष्मती (महिषी) नगरी में रहते थे। मंडन मिश्र की विद्वता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उनके घर का पालतू तोता भी संस्कृत का श्लोक बोलता था।

मंडन मिश्र की पत्नी उभय भारती भी अपनी विद्वता के लिए प्रसिद्ध थी। उस समय धर्म–दर्शन के क्षेत्र में आदि शंकराचार्य की ख्याति भी दूर–दूर तक फैल चुकी थी। कहा जाता है कि उस वक्त ऐसा कोई भी ज्ञानी नहीं था, जो आदि शंकराचार्य से धर्म और दर्शन पर शास्त्रार्थ कर सके।

शंकराचार्य देश भर में घूम घूम कर साधु–संतों और विद्वानों से शास्त्रार्थ करते और सबों को हराते और अपना शिष्य बनाते चले गए। इसी यात्रा के दौरान वह मिथिलांचल के मंडन मिश्र के गांव तक भी पहुंचे थे। मंडन मिश्र गृहस्थ आश्रम में रहने वाले विद्वान थे। उनकी पत्नी भी धर्म शास्त्र की ज्ञाता थीं।

इस दंपती के घर पहुंचकर शंकराचार्य ने मंडन मिश्र से शास्त्रार्थ करने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने शर्त रखा कि अगर मंडन मिश्र हार जाते है तो ऐसी स्थिति में वह जीतने वाले का शिष्य बन जाएंगे और अपने गृहस्थ जीवन त्याग कर ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे।

अब सवाल खड़ा हुआ कि दो विद्वानों के बीच शास्त्रार्थ में हार–जीत का फैसला कौन करेगा। आदि शंकराचार्य को पता था कि मंडन मिश्र की पत्नी भारती विद्वान हैं। उन्होंने उन्हें ही निर्णायक की भूमिका निभाने को कहा। शंकराचार्य के कहे अनुसार भारती दोनों के बीच होने वाले शास्त्रार्थ का निर्णायक बन गईं। मंडन मिश्र और शंकराचार्य के बीच 21 दिनों तक शास्त्रार्थ होता रहा।

निर्णय की घडी आ गयी थी। दोनों एक से बढ़कर एक तर्क दे रहे थे। इसी बीच देवी भारती को कुछ समय के लिए बाहर जाना पड़ा। जाते–जाते उन्होंने दोनों विद्वानों को पहनने के लिए फूलों की एक–एक माला दी और कहा कि ये दोनों मालाएं मेरी अनुपस्थिति में आपकी हार और जीत का फैसला करेंगी।

देवी भारती थोड़ी देर बाद अपना काम पूरा करके लौट आयी। उन्होंने आते ही मंडन मिश्र और शंकराचार्य को बारी बारी से देखा और अपना फैसला सुना दिया। आदि शंकराचार्य विजयी घोषित किये गए। लोग हैरत हो गए कि बिना किसी आधार के भारती ने अपने पति को ही पराजित करार दे दिया। वहाँ बैठे एक विद्वान् ने नम्रतापूर्वक जिज्ञासावश कहा–हे देवी, आप तो शास्त्रार्थ के मध्य ही चली गयी थी ..फिर लौटते ही आपने ऐसा फैसला कैसे दे दिया?

भारती ने शांत भाव से उत्तर दिया। जब भी कोई विद्वान् शास्त्रार्थ में पराजित होने लगता है और उसे पराजय की झलक दिखने लगती है तो वह क्रोधित होने लगता है। मेरे पति के गले की माला उनके क्रोध के ताप से सुख चुकी है, जबकि शंकराचार्य की माला के फूल अब भी पहले की भांति ताजे हैं। शंकराचार्य ने क्रोध पर भी विजय पाई है। निर्णायक की हैसियत से भारती ने कहा कि उनके पति हार गए हैं। वे शंकराचार्य के शिष्य बन जाएं और संन्यास की दीक्षा लें।

लेकिन अगले ही क्षण देवी भारती ने शंकराचार्य से कहा, मेरे पति अभी संन्यास नहीं ले सकते, अभी आप की पूर्ण विजय नहीं हुई है। उनकी बातें सुनकर शंकराचार्य और वहाँ उपस्थित लोग हैरान होकर उनकी ओर देखने लगे।

भारती ने आगे कहा, मंडन मिश्र विवाहित हैं। शास्त्रों में माना गया है कि पत्नी पति की अर्धांगिनी होती है। हम दोनों मिलकर अर्ध नारीश्वर की तरह एक इकाई बनाते है। आपने अभी आधे भाग को हराया है। इसीलिए आपको मुझे भी शास्त्रार्थ में पराजित करना होगा।

हालाँकि वहाँ सभी मौजूद लोग इस बात का विरोध करने लगे और मंडन मिश्र ने भी हार स्वीकार कर उनके शिष्य बनने को तैयार हो गए थे।

लेकिन भारती अपने कथन पर अडिग रही और कहा, आप मुझे पराजित करके ही मेरे पति को अपना शिष्य बना सकते है, या तो आप हमसे शास्त्रार्थ करें या फिर आप अपनी हार स्वीकार करें।

कहते है कि शंकराचार्य को मंडन मिश्र की पत्नी की बात माननी ही पड़ी। शंकराचार्य तो ज्ञानी थे ही और उनको अपने ऊपर पूरा भरोसा था। इसलिए शंकराचार्य ने भारती का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। दोनों के बीच जीवन जगत से सम्बंधित प्रश्नोत्तर होते हुए कुछ दिन बीत गए। एक महिला होने के बावजूद उन्होंने शंकराचार्य के हर सवाल का जवाब दिया। वे ज्ञान के मामले में शंकराचार्य से बिल्कुल कम न थीं, लेकिन 21वें दिन भारती को यह लगने लगा कि अब वे शंकराचार्य से हार जाएंगी। इसलिए 21वें दिन भारती ने एक ऐसा सवाल कर दिया, जिसका व्यावहारिक ज्ञान के बिना दिया गया शंकराचार्य का जवाब अधूरा समझा जाता।

भारती ने शंकराचार्य पूछा–कामशास्त्र क्या है ? इसकी प्रक्रिया क्या है, इनमे कितनी मुद्राएँ होती है और इससे संतान की उत्पत्ति कैसे होती है?

इस पर शंकराचार्य ने भारती से पूछा, हे देवी, एक ब्रम्हचारी से ऐसा प्रश्न क्यों ?

भारती ने उनसे सिर्फ इतना कहा, क्या, कामशास्त्र, शास्त्र विद्या नहीं ?

फिर आप तो सर्वज्ञ हैं, जितेंद्रिय हैं, तब आप ही बताएं– इसका उत्तर क्यों नहीं देना चाहते हैं ?

आदि शंकराचार्य तुरंत सवाल की गहराई समझ गए। वे उस वक्त इसका जवाब देने की स्थिति में नहीं थे, क्योंकि वे ब्रह्मचारी थे और दांपत्य जीवन का उन्हें कोई अनुभव नहीं था। पढ़ी–सुनी बातों के आधार पर जवाब देते तो उसे माना नहीं जा सकता था।

तब शंकराचार्य ने भारती से कहा ...हे देवी, मैं आपके प्रश्नों का उत्तर जरूर दूंगा लेकिन मुझे एक माह का मोहलत चाहिए।

इस पर भारती ने कहा, जैसी आपकी इच्छा।

ऐसा कहा जाता है कि शंकराचार्य उस सभा को छोड़ कर जंगल की ओर चले गए। जंगल में विचरने के दौरान उन्हें एक अमरु नाम के राजा का शव दिखाई दिया जिसकी मौत शिकार के दौरान हो गई थी।

उसी क्षण आचार्य शंकराचार्य ने कुछ सोचा और अपने प्रबल योग शक्ति से अपने शरीर का त्याग कर राजा अमरु के मृत शरीर में प्रवेश कर गए। आदि शंकराचार्य ने उस मृत राजा की देह को धारण कर लिया। वह राजा की काया के साथ उसके महल में गए और उसकी पत्नी के साथ उन्होंने भारती के तमाम सवालों का जवाब ढूंढा। उसके बाद वह अपने मूल शरीर में वापस आये और फिर भारती के पास आकर उन से शास्त्रार्थ किया।

इस बार उन्होंने भारती के सारे सवालों का जबाब दिया और उन्हें पराजित किया। इस तरह आदि शंकराचार्य ने मंडन मिश्र और उनकी पत्नी भारती को पराजित करके उन्हें अपना शिष्य बनाया और पूरे मिथिलांचल में अपने धर्म का ध्वज फहराया।

■

भागलपुरी जर्दालू आम

स्वाद के साथ सुगंध भी

"भागलपुरी जर्दालू" आम लंबे समय से बिहार के भागलपुर और आसपास के जिलों में उगाए जाने वाले आम की एक अनोखी किस्म है (चड्ढा, 2001, मजूमदार और शर्मा, 1990)। बिहार गजेटियर, भागलपुर के अनुसार, यह आम की महत्वपूर्ण किस्मों में से एक है। वर्तमान में, इसे बिहार के तीन जिलों में लगाया गया है और इसके गुणन के लिए कुछ नर्सरियाँ स्थापित की गई हैं।

ऐसा माना जाता है कि जर्दालू आम की खेती सबसे पहले इस क्षेत्र में खड़गपुर के महाराजा रहमत अली खान बहादुर ने की थी। ऐसा कहा जाता है कि जर्दालू आम की उत्पत्ति आम के एक बीजू पौधे के चुनाव के फलस्वरूप हुआ है। भागलपुर जिले के जगदीशपुर प्रखंड के तगेपुर गाँव में आज भी जर्दालू का एक अत्यंत पुराना पेड़ अवस्थित है जो एक मातृ पौधे के स्रोत के रूप में कार्य करता है। राज्य बागवानी मिशन, बिहार सरकार द्वारा पिछले चार वर्षों से भागलपुर जिले में भागलपुरी जर्दालू वृक्षारोपण के तहत क्षेत्र विस्तार पर एक विशेष कार्यक्रम शुरू किया गया है। बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर को किसानों की जर्दालू पौधों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए हर साल बड़ी संख्या में भागलपुरी जर्दालू के ग्राफ्ट पौधे को तैयार करने का काम सौंपा गया है।

18 मई, 2018 को रजिस्ट्रार, जीआई, पंजीकरण, चेन्नई के कार्यालय द्वारा "भागलपुरी जर्दालू" को जीआई टैग मिला। यह टैग आम उत्पादक संघ, मधुबन ग्राम, महेशी, तिलकपुर, पी.ओ. सुल्तानगंज, भागलपुर, को दिया गया है। यह उत्पाद (फल) जीआई, पंजीकरण की श्रेणी 31 के अंतर्गत आते हैं। बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, बिहार ने भागलपुरी जर्दालू की जीआई प्राप्त करने के लिए आम उत्पादक संघ को हर तरह की सुविधा एवं सहायता प्रदान की है। भागलपुरी जर्दालू के जीआई प्राप्त करने के लिए आवेदन जून, 2016 में विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया था और अंततः आवेदन संख्या 551 के माध्यम से मई, 2018 में इसे भौगोलिक पहचान प्राप्त हुआ। यह भौगोलिक पहचान राज्य के तीन जिलों भागलपुर, बांका और मुंगेर के लिए दिया गया है।

महामहिम राज्यपाल ने विशिष्ट स्वाद वाला बिहार का जर्दालू आम भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभाध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद तथा केंद्रीय मंत्रियों सहित सभी राज्यों के राज्यपाल/उपराज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं अन्य महानुभावो को रसास्वादन हेतु उपहार स्वरूप भेंट किया।

जर्दालू आम के फल मध्यम आकार के (186–265 ग्राम) तथा छिलके सुनहरे पीले होते हैं। गूदे का रंग सुनहरा पीला होता है। भागलपुरी जर्दालू आम एक गूदेदार पीले रंग का फल है जिसमें असाधारण गुणवत्ता और एक आकर्षक सुगंध होती है। इसका गूदा नरम, थोड़ा रेशेदार, अत्यंत स्वादिष्ट एवं सुवासित, रसीला एवं हल्का मीठा होता है। यह अगेती किस्म शुरुआत से मध्य सीजन तक मिलता है।

भागलपुरी जर्दालू को भौगोलिक पहचान मिलने के बाद बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर आम के गुणवत्ता, उचित पैकेजिंग, विपणन एवं ब्रांडिग के लिए सतत् प्रयासरत है। विश्वविद्यालय द्वारा 25 मई 2023 को जर्दालू आम के प्रसार – प्रचार एवं ब्रांडिग के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें यह निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय अपने सभी पत्राचार के लिफाफे पर भागलपुरी जर्दालू आम के लोगो एवं विशेषताएं अंकित करेगा। डाक विभाग के द्वारा भी जर्दालू के पहचान सहित लिफाफा जारी किया जा चुका है। बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर द्वारा इसकी ब्रांड़िग एवं दूरस्थ बाजार में विपणन के लिए अच्छे पैकेजिंग की आवश्यकता को देखते हुए भारतीय पैकेजिंग संस्थान, मुम्बई के साथ MOU पर हस्ताक्षर किया गया है। साथ ही इस आम के अधिकृत उपयोगकर्त्ता (Authorized Users) का भी पंजीकरण जी0 आइ0 कार्यालय, चेन्नई से कराया गया है, ताकि गुणवर्त्तायुक्त भागलपुरी जर्दालू का बाजारीकरण किया जा सके। ■

झमटा नृत्य करतीं थारू महिलाएं

अनूठी है थारुओं की लोक संस्कृति

पश्चिमोत्तर बिहार के तराई क्षेत्र की नेपाल सीमा से सटे गांवों में रहने वाली थारू जनजाति की अनूठी संस्कृति ही उनकी पहचान है। उनकी अलग परंपराएं, भोजन, वेशभूषा, धार्मिक आयोजन और सामाजिक संस्कार उन्हें अनूठा बनाते हैं। इनका मनमोहक लोकनृत्य विशेष रूप से झूमर, झमटा व लोकगायन विरहणी आदि काफी प्रसिद्ध है। पहले केवल कृषि पर निर्भर रहने वाली इस जनजाति के लोग अब समाज की मुख्यधारा से जुड़कर आत्मनिर्भर बन रहे हैं। सदियों से जंगल के बीच रहने के कारण ये लोग वन्यजीवन में पूरी तरह रम गए हैं।

थारू समाज के लोग अपने आप को महाराणा प्रताप का वंशज मानते हैं। बताते हैं कि वे राजस्थान के थार के निवासी हैं। मुगलों के आक्रमण के दौरान वहां से राजपूत महिलाएं सुरक्षा की दृष्टि से सेवकों व सैनिकों के साथ हिमालय की तलहटी के जंगलों में आकर बस गईं। लंबे इंतजार के बाद भी जब उनके परिवार के पुरुष वापस नहीं आ सके तो उन्होंने अपने सेवकों के साथ संबंध बनाकर अपने वंश को आगे बढ़ाया। इस तरह उनकी जो नस्ल तैयार हुई उसे 'थारू' का नाम मिला। इस मातृसत्तात्मक समाज को बिहार में भी जनजाति का दर्जा दिया गया है। थारू जनजाति में काजी, चौधरी, कुसमी, महतो, दनुवार, राणा, कुमाल, कठरिया समेत अन्य कई उपजातियां भी हैं।

झमटा नृत्य की छटा निराली

थारुओं की लोक कलाओं में कई सारे लोक नृत्य हैं। झूमर व झमटा के साथ इनके छड़ी नृत्य भी काफी लोकप्रिय हैं। प्राचीन समय में दुश्मनों से लड़ाई करने के लिए कोई हथियार नहीं होता था, इसलिए छड़ी रक्षा के तौर पर इस्तेमाल की जाती थी। पुरुष थारू छड़ी को घुमाने में कुशल होते हैं। इनके झमटा नृत्य की छटा निराली है। झमटा नृत्य मुख्यतः महिलाएं करती हैं। समूह में महिलाएं एक साथ हाथ ऊपर करके, कमर झुका कर गोलाकार घुमती और लयबद्ध पद संचालन कर इस नृत्य को आगे बढ़ाती हैं। एक या दो पुरुष संघातियां (सहयोगी) ढोलक, मांदर और मंजीरे के साथ इनका साथ देता है। झमटा नृत्य का विवाह, त्योहार, जन्मोत्सव आदि के मौके पर आयोजन किया जाता है। इसके अलावा पुत्र की प्राप्ति, अतिथि के आगमन, भाई–बहन के त्योहार (हरियाली), दीयरी (दीपावली) व कर्मा तथा नई फसल तैयार होने की खुशी में भी झमटा नृत्य का आयोजन किया जाता है। थारुओं के लोक नृत्य में मांदर और झांझ–मंजीरा तथा घुंघरू प्रमुख वाद्ययंत्र होते हैं। महिलाएं सफेद लाल रंग के पार की साड़ी के साथ सुताइल, बहुंटा और करधनी जैसे आभूषण आदि पहनती हैं।

छड़ी नृत्य करते थारू पुरुष

इसी प्रकार होरी (होली) नृत्य रंगों का त्योहार होली के मौके पर किया जाता है। यह दिन पूरी तरह से रंगों को समर्पित होता है। फसल तैयार होने के मौके पर भी थारू समाज नृत्य और परम्परागत गायन का आयोजन करता है। इस दौरान दो छड़ियों के साथ थारू पुरुष फसल पकने की खुशी में नृत्य करते हैं। ढोल, झाल और मंजीरे के थाप के साथ पद संचालन का अनोखा समन्वय इस नृत्य में देखा जाता है। ■

जयंती / पुण्यतिथि

पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर नमन करते महामहिम (27 मई, 2023)

राज्यपाल ने शहीद सूरज नारायण सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की (17 मई, 2023)

महामहिम ने शूरवीर महाराणा प्रताप को नमन किया (09 मई, 2023)

राज्यपाल ने पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय विनोदानंद झा को उनकी जयंती के अवसर पर उन्हें नमन किया (17 अप्रैल, 2023)

महामहिम राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने पार्वती नगर, तारापुर, मुंगेर में पूर्व विधायक स्व0 पार्वती देवी की प्रतिमा का अनावरण किया (20 अप्रैल, 2023)

राज्यपाल ने पूर्व पीएम स्व. चंद्रशेखर को उनकी जयंती के अवसर पर उन्हें नमन किया (17 अप्रैल, 2023)

डॉ0 अम्बेडकर की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए महामहिम राज्यपाल (14 अप्रैल, 2023)

महामहिम ने विजय दिवस के अवसर पर वीर कुंवर सिंह को नमन किया (23 अप्रैल, 2023)

बौद्ध स्तूप, केसरिया

केसरिया का बौद्ध स्तूप बौद्ध काल के गौरवशाली इतिहास का प्रतीक है। बहुभुज आकार के ईंटों से यह ढका हुआ है और इसकी ऊंचाई 104 फीट है जो दुनिया की सबसे ऊंची स्तूप है। 1998 में पुरातत्व अन्वेषण विभाग द्वारा इसके उत्खनन के बाद इसे दुनिया का सबसे ऊंचा बौद्ध स्तूप बताया गया था। यह स्तूप छह तल्ले का है, जिसके प्रत्येक खण्ड में बुद्ध की मूर्तियां हैं। स्तूप में लगी ईंटें मौर्यकालीन हैं और अपने अतीत के गौरव को बयां कर रही हैं। सभी मूर्तियां विभिन्न मुद्राओं में हैं। 1861-62 में इस स्तूप के बारे में जनरल कनिंघम ने लिखा था कि केसरिया का यह स्तूप 200 ई. से 700 ई. के मध्य कभी बना होगा।